



पू० ल० भा चुनोलालजी देसाइ
(राजकोट वाले)



* श्री परममन नम *

मानवता का मङ्गल प्रभात

भूल सुधार

पृष्ठ २० पर लकावतार सूत्र का जो उद्धरण दिया गया है वह बौद्धधर्म का होनेके कारण उसे पृष्ठ २४ में वर्णित बौद्धधर्म के प्रकरण के साथ पढ़ें तथा पृष्ठ २४ पर प्रभास पुराण तथा श्रीमद्भागवत माहात्म्य के दिये गए उद्धरण को पृष्ठ २० पर हिन्दूधर्म के दिए गए प्रकरण के साथ पढ़ें। भूल के लिए खेद है।



* ध्या परमात्मन नमः *

मानवता का मङ्गल प्रभात

लेखक एव मस्राहक —
पू० प्र० श्री चून्नीलालजी दशाष्ट
(गजकाव्याय)

प्रकाशक—
रुल्याणचन्द्र जैन
मन्त्री
श्री दिगम्बर जैन सम्मेलन
प्रचार विभाग

न २ सर हरीराम गायनदा स्मृत् कच्छता

प्राप्तिस्थान —
 श्री दिगम्बर जैन सम्मेलन
 २ नर हरिराम गायनका स्मृति
 कल्याण

नोट—बाहर से भगवान्‌वाले राजन पासपोर्ट के लिए २ नये पैसे के टिकट उत्त
 पत्र पर भोजन की टूपा करें—अपना पता ठीक से लिख कर भेजें ताकि
 भ्रम न हो सके ।

मुद्रक —
 जवाहिर प्रस
 १ १११ मन्नामा गार्धी रोड कल्याण ७

० हितकर दो शब्द ०

जाय देश भारत मन्ना से अहिंसात्मक मस्तिष्क का उद्भूत रहा है। भारत न ही दुनिया को धर्म की गैरगनी मी है। यह मन्नापुष्प ऋषिया की पावन भूमि है। श्री महावीर भ्यामी, श्री जुद्धन्व श्री रामचन्द्रनी, श्रीऋष्यान्व आदि महापुष्प इस भूमिका पावन कर गये और जगतके जन्तान-अन्तकारकी अपनी ज्ञान-प्राप्ति द्वारा नष्ट किया गये ऋषियों न श्रुति रूप मुनिगि ज्ञानपुष्पा द्वारा प्रकाश किया है। किन्तु जान यह देखकर बहुत दुःख होता है कि इस पवित्र जाय भूमि पर भी पारश्यान्व ऋषा के समान माम और मन्त्रिा का दृश्यमन जिनों जिन बन्ता ही जाता है। मानव ऋषि प्रणीत मानवता का पाठ भूय कर पशुता को अपना रहा है।

पवित्र भारत आज पतन का जोर अमररहाकर गक्षमी मानवता से गये रहा है। इस बढती हुई आसुरी लहर का रोदन न लिए और पुन अहिंसात्मक और शांताहार का प्रचार करने के लिए तत्प्रा मत्य, अहिंसा, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और मतोप का वारण कर भारत की प्रतिष्ठा फिर जगन के सामन हो, तम हेतु यह द्रोणी-मी पुस्तक का निमाण हुआ है। मन्ना साधारण का हिपापदश की उपयोगिता जन्तान के लिए इसम ऋषि प्रणीत शांता का यत्किंचिन् प्रमाण स्वर प्रकाशित कराया है।

जिनन मी पन्ना (सम्प्रदाय) धर्म के नाम पर चलते हैं, उनम मानव धर्म के प्रार म तो मत नहीं हैं।

लीनिये ऋषिये समभार से मोन कीनिये।

जैन आगम

मन्ना लोगम्मि मारभूय

अन्व—समार म सारभूत वस्तु मत्य है।

मत्त्वपु मेत्री गुणीपु प्रमाद ।

किलष्टपु जीवपु ऋपापरत्वम् ॥

माध्यस्थ भाव विपरीत वृत्ता ।

सत्ता ममात्मा विट्धातु दव ॥

अथ—सत्र प्राणिया स मेरा मैत्री भाव हा गुणी जना से मुझे प्रेम हा टु गिनत पीन्ति जीवा से प्रति मेरा कृष्णा-भाव हा, विपरीत वृत्तिराले विराधी जीवा क प्रति मेरी माध्यस्थ भावना सत्ता रहे- यह भावना से मेरी प्रायना है ।

मैत्री भावना

सम्भामि स व जीवाण मत्रे जीवा गमन्तु मे ।

मित्री मे सत्रभूदसु वैर मज्ज ण केणवि ॥

अथ—मैं सब जीवा पर श्रद्धा करता हूँ, सब जीव मुझ पर भी श्रद्धा कर, मेरी समस्त प्राणीमात्र से मित्रता है, मुझ किसी से वैर नहीं है ।

मातृव सर्वभूतानाम हिंसा हितकारिणी ।

अहिंसव हि ममारमरावमृत कारिणी ॥

अहिंसा दु सदाशान्ति प्रावृषण्य घनावली ।

भवभ्रमिरुनातानामहिंसा परमौषधि ॥

योगशास्त्र

अथ—अहिंसा सत्र प्राणिया क हित करनवाली माता क समान है और यह अहिंसा ही मत्सररूप मरु निजलक्ष से अमृत की नाली के तुल्य है और दुःखरूपी दावानि का शांत करने क लिए वर्षाकाल की मेघावली क समान है यह भव भ्रमणरूप महारोग से पीन्ति के लिए परमौषधि है ।

उपनिषद्

मत्स्य सदा विज्यते

अ३—मत्स्य की मदा तब ही है ।

गीताजी

नर्म मर्म भूतपुत्र ममामति पाण्डरा !

अ३—समस्त प्राणियों के प्रति निर्दयता, पाट के प्रति बुरा भाव मन करो ।

(महापवनचलि) याग दर्शन म ममाधिपान् ३३

मैत्री करुणा मुक्तिनोपसाणां,

सुखदृग्पृथ्वापृथ्वा विपयानां ।

भावना तद्विषय प्रमादनम्

अ३—सुखी मनुष्या से प्रेम, दुखिया के प्रति लज्जा पृथ्वा-मात्रा के प्रति प्रसन्नता और पापिया के प्रति उदासीनता का भावना से विना प्रसन्न होता है ।

राजा जनक ने पराशर ऋषि से प्र । किया है कि—

ह द्विचालम ! जहिमा-कम तदा हिमा-कमम वीन धम याग्य है, और वीन जम याग्य है ? हमरा तब -

ह महाशय तब ! जो हिमा शय से रहित है, यही चहिमा-कम पुरुषा का मयत्नर ता करता है तापर जहिमा-कम धम है और हिमा कम जागम है, (महाभारत शान्ति पर्व ८^१ अध्याय १८८) । जार-हिमा से नियन्त्र पुरुष मय जाया के हितकर और पवित्र तदा मयत्र मम भावनाग होता है (याग पुराण अध्याय १०१ प्रश्न ६०) यात्री हमारे निकट रोहा, पत्थर और मुयन समाप्त होता है ।

“जीव भवति हि जन्तुषु र्मणा विषार ॥”

मात्स्यनि

अथ—जीव जैसा कम करता है, वैसा ही कम ग्रह आता है। यह मिथ्यात्व सब ज्ञानाचार्यों का स्वरूप है ता फिर हमारे कुछ अजन भाडया का कम प्रकार की धारि हा गयी है कि रात्रि का भोजन नही करना और छान कर पानी पीना मात्र चैनिया की मायता है। हमारे ऋषि प्रणीत शास्त्रा म एसा नाट उल्लभ है, मिलता नहीं है। किन्तु हम इस बार म कृद्र प्रमाण यहा प्रस्तुत करते इनसे आप मान या न मान आपसी चुशी की बात * किन्तु न मानन से श्रुति तो मिथ्या नहीं हो सकती।

जो जीव राग, द्वेष, मोह से पीतता है वह चिन है और विमन जीन लिया है, वह चिनद्र है न जिनद्र र उपामर का जैती कर्ते है। वही बात आपसे सपिया न भी जता है फिर क्या कारण है कि हम हितकर बात का ठुसरा कर जब न्य पन्नाओं का भक्षण करते है—कगते है और हो रहा है। नका मुख्य कारण हमारी चिहा इन्द्रिय की गेलुपता दोड कर और क्या हो सकता है? चगत के कोड भी सम्प्रनाय (पत्र) के महापुरुष न हिंसा म धम मता हा एसा न सुना है न पहा है न अनुमान से प्रमाण है किया जा सकता है। पत्रम तो मनुष्य भव मिथ्या ही मुश्किल (तुलभ) है।

कहा है कि—

लब्ध्वा कथं चिन्तयन् जन्म दुर्लभम् ।

तथापि पुस्त्य श्रुतिमार दर्शनम् ।

यस्त्यात्मं मुक्त्यै न पतत मूढधी ।

म जात्महा स्वनिनिहत्य सत्प्रदत्त ॥

अथ—यह दुर्लभ मनुष्य-रूप और मनुजानुपयुक्त पुरुषपत्नी प्राप्त
 हुए भी जो मृदु बुद्धियाला पुरुष मानव के लिए प्रयत्न नहीं करता है
 यह आत्मगती मनुष्य अमन ममार को ग्रहण कर स्वयं अपना नाश
 करता है। क्या—

यह मनुष्य का शरीर जो कि निराण (मांस) से मात्र समान है,
 उस नाश में हम लिंसा, भूट, चोगी, कुशील और परिग्रह सभी माल
 मन्त्र पाते हैं। मान मन्त्र, मन्त्र आदि अशुद्ध (असत्य) अप्राकृतिक
 आहार जो मन को मग्नि, शरीर का रोगी और ध्यान से नाश
 करता है, मन्त्रे द्वारा आम-क-याण जैसे हो सकता है? अतः
 आम-क-याण के इच्छुक जीवामात्रा को प्रथम पापमय क्रिया एवं
 असत्य आहार का त्याग करना चाहिए।

हमारे कितने भाई विटामिन के भ्रम में भी असत्य का भक्षण
 करते हैं, किन्तु विटामिन की शक्ति में भी मन्त्रों में विटामिन कम है
 और हानि अधिक है। लीचिये प्रमाण —

विटामिन के बारे में प्रमाण

The trailer and his food"

By Sir William Earnshaw Cooper C. I. E

ग्राहाम आदि में १० से ६१, मन्त्र उन चावल में ८७
 गेहूँ में ८६, जौ में ८८, घी में ८७, मलाई में ९८ अणु विटामिन शक्ति
 है, तब मांस में २८ अणु में २६ अणु विटामिन है और इनके द्वारा
 शरीर में बहुत नुकसान हो पाते हैं अतः मांसादि अस्वाभाविक
 आहार होन से निषेध है।

धर्म सर्वत्र एक रूप ही है, जैसे पानी का स्वभाव ठण्डा, नमक का
 स्वभाव मार है, चाहे वह किसी देश राष्ट्र का हो। जैसे ही हम चाहे
 किसी सम्प्रदाय का हो, दयामय एक रूप ही है। ईश्वर के अनेक नाम

ह, वह किसी नाम से पुरारो, किंतु उनके गुण में कोई दोष हम ज्ञानपत्र रूपना से दृष्टर को अत्र प्रकार से मान लें तं हमारी ही ज्ञानता का रूप है, दृष्टर म नहीं। रहा भी है कि

त्वामर रीत तमम पद्मादिनोऽपि ।

नून विभो हरिहरादिविया प्रपन्ना ॥

किं काचकामलिभिरीश मितोऽपि शरौ ।

नो गृह्यते विविध वर्ण विपर्ययेण ॥

ये स्वामिन । अत्र मतावलम्बी पुरुष भी अज्ञान अन्वकार से रन्ति जापना ही निश्चय से विष्णु, मन्दाव आदि नामों से पूजते हैं क्या ? ह प्रभा तिनही आंग पर रगदार चम्मा है अथवा तिनहें पीलिया रोग हो गया है, एमे पुरुषा र द्वारा शत्रु सफे होने पर भी तरह तरह र विपरीत र्णों से नहीं ग्रहण किया जाता क्या ? अथान् किया जाता है ।

भय रीजादुर जनना रागावा क्षयमुपागता यस्य ।

त्रद्या वा विष्णु वा हरा जिनो वा नमस्तम्मे ॥

अथ—समार की परम्परा को बटानवाला एसा रागादि दोष निरुक्त शीघ्र हो गया है चाह वह त्रद्या हो, विष्णु हो, महादुर हो कि तिन हो—वाद् भी हो— उनको मरा नमस्कार हो ।

उस इतनी समभावना हमार में जा नाय तो फिर उस व नाम पर भगडा, हिंसा, व्यामाहपना क्या ? तारम्बार शांत भाव से आत्म लक्ष्य से विचार करा मत्य की मोज करो अत्रय मिलेगा, पाम है, दर नहीं त्ति घुमानी है ।

मत्यावपी एत्र अहिंसा र पुनारी

त्र० चुन्नीलाल देशाई

(गृहकार)



॥ श्री परमात्मन नमः ॥

मानवता का मंगल प्रभात

ॐ मङ्गलाचरण ॐ

असौ स्य साक्षिणो भासो यत स्वैरानु भूयते ।

जत पर स्यय मात्माप्रत्यगात्मान चैतर ॥

विश्वक श्यामणि २१८ १३१३३३

अ३—जपना यह आत्मा स्यय ही मात्मीभूत है क्योंकि अपने-आप से ही अनुभव किया जाता है इसलिए हमसे परे कोई अन्य जपना मात्मा अन्तर्गात्मा नहीं है ।

टिप्पण—

स्यानुभू या स्यय ज्ञात्वा, स्यमात्मानम खण्डितम ।

स्य मिद्धि समुद्य तिष्ठन्निर्दिष्टत्पात्मनात्मनि ॥

विश्वक श्यामणि

अ४—जपन अनुभव से अग्रगण्य आत्मा का स्यय जान कर निज मिद्धि के लिए निर्दिष्ट भाव से आनन्दपूर्ण मन निजात्मा में ही स्थिर रहा ।

न कर्तृत्व न क्रमाणि लोकाभ्य सञ्चति प्रभु ।

न कर्म फल मयोग स्वभासस्तु प्रवर्त्तत ॥

न दत्त कस्य चिन्पाप न कस्य मुह्यत प्रभु ।

अवानेनाश्रुत ज्ञान तेन मुच्यन्ति जन्तव ॥

अथ—एश्वर जगत् का कर्ता नहीं है, न कर्मों का उत्पाद करता है, इसी प्रकार कर्मों के फल की योजना नहीं करता, मत्र स्वभाव से होता है । परमेश्वर किसी का पाप नहीं करता और न पुण्य देता है । अज्ञान के द्वारा ज्ञान पर पतन पड़ने से प्राणीमात्र मोक्ष में फँस जाते हैं ।

स्य स्या विद्या बन्ध सम्बन्ध मोक्षा
त्सत्य ज्ञानानन्द रूपात्म लब्धौ ॥

शिवर उद्गमणि

अथ—अपने ज्ञान रूप बंधन का समग्र (सम्बन्ध) छूट जान से ही सच्चिदानन्द रूप आत्मा की प्राप्ति होती है ।

ज्ञानेन तु तद् वान वेया न शिव मात्मन ।
तेषा आदित्य वज्जान प्रकाशयति तत्पर ॥

गीता अ० अ० १८

सुगम्य दृ सत्य न कोऽपि दाता ।
वगे ददातीति कुमुद्वि रया ॥
अह करोमीति वृथाभिमान ।
स्वकर्म सुत्र ग्रन्थितो हिलोऋ ॥

अन्यास समाप्ति

अथ—सुख दुःख का फाइल पत्राग नहीं है, अपने अज्ञान के कारण से ही जान पड़ पाता है । इसलिए अहंकार और अभिमान के कारण मत कर, कदापि तर अच्छे दूर कम ही तुम्हें लोक में गमाते हैं वही शक्ति का मार्ग है ।

— जल छान कर पीने का प्रमाण —

दृष्टि पूत न्यसेत्पाद रस्त्र पूत पिवज्जल ।

शस्त्र पूत रदद्वाप्त्य मन पूत समाचरत् ॥

विष्णु पुराण न ३

अथ—माग चलते हुए दग्ध कर चरना चाहिए, जल या पय पदाथ रस्त्र से छान कर पीना चाहिए यद्यत् शस्त्रानुमार प्रमाणिक सोलना चाहिए और मन का गुद्ध कर आचरण करना चाहिए ।

दृष्टि पूत न्यसे पाठ वस्त्र पूत जल पिवत् ।

सत्य पूता रद द्वाच मन पूत समाचरत् ॥

मनुस्मृति अ० अक्ष ८

अथ—भूमि पर दग्ध कर पात्र रखें, पानी वस्त्र से छान कर पीया करें, सत्य रचन ही का बोल और मन का गुद्ध कर (इच्छा रहित) आचरण करना चाहिए ।

जल को क्या छानना चाहिए —

सूक्ष्मानि जन्तूनि जलाश्रयाणि ।

जलस्य रणाकृति मस्थितानि ॥

तस्माज्जल जीवदया निमित्त ।

निग्रशूग परिचर्यन्ति ॥

भागवत पुराण

अथ—जल में आश्रय में सब चतु रहत हैं, उनका वण में आकर जल के समान जाना है, इसलिये जीवदया के लिये तत्परज्ञानी पुरुष जल को भी त्याग करते हैं (अत्रान् नितल उपवास करत है) अत्रया पिना छाना हुआ जल नहीं पीत है ।

जल छान कर न पीने का फल

मन्मथेण यत्पापं कुर्वते मन्थ्य रन्ध्रम् ।

तत्पापं जायते नित्यं सपूतं जलं सग्रहात् ॥ ३३ ॥

(१ = पुण्य)

श्र-मन्थना का पत्थनवाला या पाप र तप म कर हे रा-
त्य बिना छाना चट का सघट भा हाय हे ॥ ३३ ॥

त्रि भोजन (त्याग) एव मद्य मास मधु

के त्याग का प्रमाण

अस्तगतं त्रिानाद्यं, तायः रू रधिर मुन्यत ।

अन्तं मासं मम प्रोक्तं, मार्गण्डे महीषिणा ॥

(मार्गण्ड्य पुण्य)

श्र-सूय क अस्त भय वात् रात्रि म जल रधिर र समान हे

मास क समान हे । एसा मार्गण्ड शरि का वाक्य हे ।

(* अर्थात् ना च मिना टे ।)

चन्दारो नरः द्वारं, प्रथमं रात्रि भोजनम् ।

परस्त्री गमनं चैव, मघानानन्तं कायते ॥ ३६ ॥

ये रात्रौ मर्त्तं दाहारं, र्जयन्ति सुमेधम ।

तेषां पञ्चोपनामस्य, फलं मासं जायते ॥ ३७ ॥

नोदकं मपि पातय, रात्रा रन्तं युधिष्ठिर ।

तपश्चिना विशेषेण, गृहिणा च विप्रकिना ॥ ३४ ॥

अथ—नरक के चार द्वार हैं, प्रथम रात्रि भोजन, (२) परखी गमन करना (३) अचार मुग्धा जाति गाना, (४) वल्गु मूल जाति अनंत काय का भक्षण करना, जो बुद्धिमान रात्रि में मद्य तरद के जाहार का त्याग करने से है, अन्य एक मास में पन्द्रह उपवास हो जाता है जहाँ उनसे पन्द्रह उपवास का फल प्राप्त हो जाता है। श्री कृष्ण भगवान् यज्ञिष्ठिर से कहते हैं कि—ह युधिष्ठिर ' विचार-शील गृहस्थों को रात्रि में जल नहीं पीना चाहिये और तपस्वियों को ता विगपता न माद्य त्याग कर देना चाहिये ।

रसोनग्रसन चैव पलाण्डु मूलपिण्डक ।

मद्यु माम सुरा चैव मूलस्तु विगपत ॥

प्रमाण पुराण ११३

अथ—प्याच का भक्षण फिर एक विगेष पिंडाल, सहस्र मास, सुरा पान मृगी सत्रही सु विगेष त्याग्य है ॥ ११० ॥

मद्यमांशान, रात्रौ भोजन, रुन्द भक्षणम् ।

ये कुर्यन्ति वृथास्तथा, तार्थयात्रा जपस्तप ॥

वृथा एकादशी प्रोक्ता, वृथा जागरण हर ।

वृथा च पुष्करीयात्रा, वृथा चान्द्रायण तप ॥

पद्पुराण भाग ७३८

अथ—जा मद्य मांस और रात्रि भोजन का भक्षण करता है, उसकी तीर्थ यात्रा, जप तप वृथा है साइ कायकारी नहीं है और उसे प्राणी का एकादशी तप जागरण और पुष्करी-यात्रा चन्द्रायण तप आदि वृथा है ।

मस ग्रामेषु दग्धेषु, यत्पाप जायते नृणाम् ।

तत्पाप जायते पुमा, मगुविन्दैक भक्षणान् ॥

अथ—सात गांय को जलान मे जो पाप होता है, उनका पाप
 गृह की एक वृक्ष खाने से जाता है। जो गाय मत्त शक ही खाते
 रहते है, व अक्षय नरक म जाते है, ममे जोड मन्त्र नर्न है।

जीवाड मधु मश्रुत, स्लेच्छोचिष्ट न सशय ।

वर्ननीय सदा विप्रै , परलोकाधि कांक्षिन ॥

अथर्व पुगण

अथ—जीवा की जण्टा करने मधु ठपने है और स्लेच्छ उचिष्ट है,
 यामे मशय नाह, जो प्रायण परगेर म सुग चाहता है, तिसो
 न्याग कर न्ना चाहिण।

मत्र मासे मधुनि च नरनीते तत्र ता वहि ।

उत्पद्यत विपद्यन्ते, तद्वर्णास्त्वत्र जन्तव ॥

नाग पुराण

अथ—मत्र म माम म मधु म और भित्र क्रिया गण्या घी
 (मग्न) म मी का के जीव उत्पन्न और नष्ट हात है।

मत्त ग्रामेषु यत्पापमग्निनाभस्म सा लृते ।

तत्पाप जायते जन्तोर्मधु विद्व क भक्षणात् ॥ १६ ॥

मनुस्मृति

अथ—सात ग्राम अग्निकर भस्म करन मे जो पाप होय है, सो
 पाप मधु (शक्त) का एक विन्दु का भक्षण से ही हाय है।

(*) 'जन्तु मधु' ण्मा पाठ महाभाग्न शान्तिपर तृतीय अधिऋगमे है)

या ददाति मधु श्राद्धे, माहितो धर्म लिप्मया ।

म याति नरर धीर, सादर सट लम्बट ॥ ५१ ॥

अथ—जो पुष्प राम की आज्ञा करि श्राद्धम मोह करि मधु (महत)
देव ह, सो पुष्प गानेवाल लखटी पुष्पा महित नरक म जाय ॥

(मन्मथान्न गार्ग्य तपत्र नृनीय अधिपार)

नद्यादामिप श्राद्ध न चाद्यात् धर्म तत्प्रवित ।

मुन्यन्तं स्यात् परा प्रीतिर्यथान पशु हिंसया ॥ २५ ॥

श्री मन्मथान्न गार्ग्य १ । १० गार्ग्य २५

अथ—धर्म तत्र के ज्ञाता पुष्प श्राद्ध म न किसी को मोस देते ह
और न ग्यात हे क्यारि मुनियो न ग्यात योग्य श्रीही आनि शुद्ध अत्र
से पितरा न जैसी परम प्रीति हाता ॥ रामी पशु की हिंसा से
क्यापि नहीं हाती ।

यो यनेताश्चमेवेन, मामि मामि यत तत ।

वर्गयेत् मधु माम च मममत्तं यद्विष्टिर ॥ १० ॥

मन्मथान्न गार्ग्यान्न पत्र १-श्राव ११४ गार्ग्य १

अथ—काह एक मनुष्य यनि सो पत्र तत्र महीन महीन अश्वमेध
यज्ञ करे और दूसरा करल मय माम का श्री त्याग कर ता
ह युविष्टिर । व जना तुय हो ह ।

मेद मूत्र पुगी मात्रै रसाय बधित मधु ।

छदि लालमुग्धभापै, भिक्षन्त प्राद्वणं कथ ॥

मन्मथे पुराण मन्त्र

अथ—जा मध, चरा मूत्र, त्रिष्टानि से तथा च्छाक और मुग्ध की
बन्ती छुट लार से, बद्धिगत हाता ॥ न मध प्राद्वणा द्वारा कैसे
साया जाय ? अबानु न साया जाय ।

सुरा मत्स्थन् मधु माम, मामर क्रमरादनम् ।

स्ति प्रवर्तित द्यतश्च नैतद् वेदेषु कल्पितम् ॥

सर्वं कर्म स्व हिमाहि धमात्मा मनुस्मृतीम् ।

काम काद विहिमन्ति, विहिमन्त्यान्पशुचर ॥

विचखनु मृषि

अथ—मन्त्रिग, मठली, मांस, आम्र आदि का यज्ञा में उपयोग करना वर्दा में स्थापि नहीं है, परन्तु स्वर्गी धृती ने प्रवृत्ति चला दी है। धमात्मा मनु महागान ने तो सभी कामा म अज्ञिसा का ही विधान किया है। यत् वेत् के गहर पशुआ की बलि हो रही है, यह सब मनमानी क्रिया है।

वर्जयेन मधु मास च, गन्ध रमान स्त्रिय ।

गुक्तानि यानि मन्त्राणि, प्राणिनाचर हिमनम् ॥

मनुस्मृति अन्वय २

अथ—शहद, मांस, चन्दन इत्र आदि पदार्थ, फूल मालायें, रत्न, स्त्रियों और मन प्रहार के आसनों का तथा प्राणियों की हिंसा का सबथा त्याग करें।

मांस भक्षि पताञ्जुत्र यस्य माममिहादम्यहम् ।

एतन्मामस्य मामस्य प्रवदन्ति मनिपिण० ॥ ५५ ॥

मनुस्मृति

अथ—मांस शब्द का महात्मा मनु ने एसा अर्थ दिया है—जिसका मैं मांस खाता हूँ, वह मुझको जमान्तर में खायेगा।

न कृत्वा प्राणिना हिंसा, मामष्टत्पद्यते क्वचित् ।

न च प्राणिरथ स्वर्गस्तस्मात्मास विजर्जयेत् ॥

मनुस्मृति अ० ५ अ० ४८

अथ—प्राणियों की हिंसा क्रिये बिना माम कहीं पैदा नहीं होता है और प्राणी का बंध स्वर्ग सुरा नहीं देता, इसलिए मांस को सबथा त्याग

कर देना ही उचित है अथवा माम-भक्षी जीव-हत्या का दोषी है ।
 माहिंस्यात् ।

यजुर्वेद ४० १८

अथ—हिंसा मत करो ।

मित्रास्याह चक्षुषा मरानि भूतानि समीक्ष्ये ।

अथ—मैं सब प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखता हूँ ।

वपे वपेऽश्रमेधेन योयजत शत समा ।

मामानि न च खादेद् यस्तयो पुण्यफल समम् ॥ ५३ ॥

अथ—प्रत्येक वप में एक पुरुष अश्रमेध करके सौ वप तक यह करे और एक पुरुष त्रिलकुल माम न खाए तो उन दोनों का ममान ही फल है ।

देवापहार व्याजन, यत् व्याजंतपेऽथवा ।

ध्नन्ति जन्तून् गतघ्रणा घोरा त यान्ति दुर्गतिम् ॥१॥

अचिमाणियां क उद्गा

अथ—द्वय पूजा के निमित्त या यज्ञ कम के निमित्त से जो निन्द्य पुरुष प्राणियों को निन्द्य हाकर मारता है, वह घोर दुर्गति में जाता है ।

हिंसा और हिंसा का फल

अन्धे तममिम ज्नाम पशुभियेयजाम ह ।

हिंसा नाम भवेत् धर्मा न भूतो न भविष्यति ॥

अथ—जो लोग पशु से यज्ञ करते हैं, उससे अधकार मय स्थानों में डूबते हैं, क्योंकि हिंसा से न कदापि धर्म हुआ न होगा ।

यावन्ति पशु रोमाणि पशु गात्रपु भारत ।

ताव द्वर्ष सहस्राणि पश्यन्ते पशु घातका ॥

(भागवत पुराण श्री कृष्ण भगवत)

अथ—पशु के शरीर में जितना रोम हैं, उतना हजार वर्ष तक पशु-
नरक में अवश्य दुःख भोगगा ।

न च ध्यान न च स्नान, न त्पान न च सत्क्रिया ।

मयै ते निष्फल यान्ति जीव हिंसा क्रोत्रिषु ॥ (मनुस्मृति)

अर्थ—जीवा की हिंसा करनेवाले के ध्यान, स्नान, त्पान आदि
शुभ क्रियाएँ मय निष्फल हो जाती हैं ।

पशून् हत्वा तथा तस्मायाऽचयेन् माम शोणितै ।

तामनेन् नरके वामो यावच्चन्द्र दिवाकरी ॥

क-प-मा-गी पशु-ना-र-व-प- १ ८ अध्याय १०५

अथ—पावनी न शिरसी में कहा—पशुआ का मार कर जो माम
रशिर में हमारी तुम्हारी पूजा करता है, उमरा तयतक नरक में बास
होगा, जयतक कि मय और चन्द्रमा हैं ।

प्राणि घातात्तृ यो धर्म, मीढ त मृद मानम ।

म प्राञ्छति सुधावृष्टिं कृष्णाऽहिमुख कोटगत ॥ पुराण

अथ—जो प्राणियों के घात में धर्म चाहता है, वह बाले मय के
सुग रूप गुफा से अमृत की वृष्टि को चाहता है ।

तस्य तेनानुभावेन मृगहिंसाऽऽत्मनस्तदा ।

तपो महत् मधुच्छिन्न तस्माद् हिंसा न यनिया ॥

महामा-र-न-श-र-नि-प-ध-मा-भा-वि-कार-अ- २७३ पृ० १०४

अथ—स्वयं के अनुभाव से एत मुनि ने मृग की हिंसा की, तब
उस मुनि का जन्म भर का बड़ा भारी तप नष्ट हो गया । अतः हिंसा
से यज्ञ भी हितकर नहीं है ।

युष्मच्छित्वा पशून् हत्या कृत्वा रुधिर कर्दमम् ।
यद्यत्र गम्यते स्वर्गे नरक वेन गम्यते ॥

अथ—यज्ञस्तम्भ की छेदन से, पशुजा का मारने से, रुधिर की कीचड़ करण से यदि स्वर्ग में गमन हा तो नरक में कौन कम से गमन हो सकेगा जथा जीव हिंसा व अरात्र पाप दुनिया भर में नहीं है ।

ममर्थे यदि कुर्वन्ति प्राणिनाम जीव घातनम् ।

कोटि कल्प शत शभा गौरवे मरसेद् ध्रुवम् ॥ इन्द्रपुराण

अथ—इन्द्रपुराण में कहते हैं कि—हे शम्भो ! यदि मेरे लिए प्राणियों का जीव घात किया जाता है जथा मेरे नाम पर किसी तरह की बोलचाल कर जीवों की हिंसा करते हैं, व करोड़ों कल्प काल तक निरन्तर से घोर नरक में महान दुःख भागते हैं ।

यन् हृत्वा पशून् हत्या, कृत्वा रुधिर कर्दमम् ।

यत्रैत्र गम्यते स्वर्गे, नरक वेन गम्यते ॥ इन्द्रपुराण

अथ—यदि यज्ञ में पशुओं की हत्या कर उनके रक्त की कीचड़ में हाथ रङ्ग कर स्वर्ग मिलता है तो बताया नरक में कौन कम करने से जीव जाता है ।

सर्ववदाश्च यज्ञाश्च, तपो दानादि चानघ ।

जीवा भय प्रदानेन, न कुर्वीरन फलान्यपि ॥ भागवत

अथ—जा जीवा का अभय दान नहीं करते उनके सब वेदा का पढ़ना, यज्ञ करना, तप दान और पुण्य करना सब निष्फल (त्र्यथ) है ।

अष्टा दश पुरानेषु, यासस्य वचनद्वयम् ।

परोपकार पुण्याय, पापाय पर पीडनम् ॥ इन्द्रपुराण ४४

अथ—अथाह पुराणों में व्यास जी के जो ही उचन मुख्य हैं कि पर अपराग नराग पुण्य नहीं और पीता यानी जीव हिंसा बराबर पाप नहीं ।

यस्तु मत्स्यानि मामानि भुञ्जित्वाप्रपद्यते ।

अष्टा दशापराध च कल्पयाम ऋमुन्धरे ॥ २१ ॥

यस्तु वराह मामानि प्रापण नोपपादयेत् ।

अपराध त्रयो विंश कल्पयामि ऋमुन्धरे ॥ २६ ॥

सुरा पीत्वा तुयो मर्यं स्थाचिदुपमर्षति ।

अपराध चतुर्विंश कल्पयामी ऋमुन्धरे ॥ २७ ॥

शशाङ्ग पुराण १ ११२ २१ २६ २७

अथ—जो मछरी का मांस भक्षण करता है वह अथाह अपराधा का अपराधी है तथा सुअर का मांस भक्षण करता है, वह वेदम अपराध का भागी होता है और मन्त्रि (शशाङ्ग) पीनेवाला चौबीस अपराध का अपराधी है ।

— मांस खाने का निषेध —

न शङ्गा न च श्रेणार, न प्रयागो न पुष्करम् ।

न च तान न च ध्यान, न होमो न जप त्रिया ॥ १५ ॥

न दान न च होम, न च पूजा न गुरोर्नति ।

यदि ग्याति मामानि, सर्वमेव निरर्थक ॥ १६ ॥

क मांस क शिवेभक्ति, क मत्र क शिवाचन ।

मद्य मामानुग्न्तभ्यो, दूर तिष्ठति शङ्कर ॥ १७ ॥

किं जाप्य होम नियमै, तीर्थं न्यानेन नारद !

यदि ग्याति मामानि, सर्वमेव निरर्थक ॥ १८ ॥

अल्पायुषो दरिद्राश्च, पर कर्मोपजीविन ।
 दुष्कृतेषु च जायन्ते, ये नरा माम भक्षका ॥ २२ ॥
 तिल मर्षण मात्र तु यो माम खादते नर ।
 सपाति नरक घोर यावच्चन्द्र दिवाकरौ ॥ २३ ॥
 अस्थिमामी सदा रदो, मासवामी जनार्दन ।
 श्रुत्वेच वमति ब्रह्मा, तस्मानमाम न भक्षयेत् ॥ २४ ॥
 न ग्राह्या न च दयानि, स्व कृटुम्याद्विवेकिना ।
 अग्नि मधु त्रिष अस्त्र, मद्य माम तर्थाय च ॥ २५ ॥

अथ—जो पुरुष मांस खाव, उसका गद्गा स्नान व्यर्थ है, केदारनाथ जाना भी कुछ नहीं, प्रयाग जाना, पुष्करराज जाना कुछ कायकारी नहीं । उसकी ज्ञान ध्यान, तप जप मंत्र क्रिया निरर्थक है ॥ १५ ॥

दान, होम, पूजा, गुरु नमस्कार, मय जो मनुष्य मांस खाता है तो, उसकी क्रिया व्यर्थ है ।

कहा मांस और कहा शिवम भक्ति, कहा मद्य कहा शिवका पूजन, मद्य मांस के खाने से अनुरक्त होने पुरुषों से शिव पर रहता है ॥ १७ ॥
 हे नारद ! जो कोई मांस खाव, उससे चाण्य, हाम नियम करि क्या फायदा होय और तीव्र स्नान करि क्या होय जवान् मंत्र व्यर्थ है ।

जो नर मांस भक्षण करते हैं, वह जल्पायुवाले दरिद्री पर की सेवा से उदर भरनेवाले नीच कुटुम्ब ही उत्पन्न होते हैं ॥ - ॥

जो मनुष्य तिल वा मिरम्या प्रमाण मांस भक्षण कर तो वह मनुष्य जत्र लग चन्द्र मय रज्जु तत्र लग नर मे रहगा । महाद्व सदा अग्नि (हाथ) में रहता है चनात्न त्रिभु मांस से प्रसता है, शुरु म रह है तात मांस की कर्मा भी भक्षण नहीं करना ॥ २२ - ४ ॥

शानी पुरुष अपने कुटुम्ब में भी अग्नि, मज, विप, शस्त्र, मज, मांस—ये वस्तु न लेव और न दवे ॥ २५ ॥

— मांस ग्याने का फल —

म्यमांस परमासेन यो वद्वैयितुमिच्छति ।

नास्ति क्षुद्र तरस्तस्मात् मनुश्मतरौ नर ॥

महाभाग अजु० पृ० ११०

अर्थ—जो दूसरे के मांस से अपने शरीर का शक्तिशाली बनाना चाहता है, उसे अधिक क्षुद्र कीट उड़ा है, वह नरक में महा निन्दनीय नर है ।

मदये शिव कृषन्ति तामसा जीव घातनम् ।

आश्लेष कोटि नरके तथा तामो न मशय ॥

पद्मसुगण निरूपति दुषा

अर्थ—पापतीजी शिवजी को कष्टनी है—ना हमारे नाम पर पशुओं को मार कर उनके मांस और गून से हमारी पृथा करते हैं, पशुओं की उड़ों का प तक नरक में महान दुःख महान करने पड़ेंगे इसमें कोई संशय नहीं ।

जो अपने हाथ से जीव हत्या करता है, मांस खाता है, बेचना है, पकाना है, खरीदता है या पका करने की राय देता है व मज जीव-निमा के महापापी है ।

मजुस्मृति ५ १५

मांस खानेवाले को नरक में गरम तेल में कटाआ म उपों तक पकाया जाता है ।

महाभाग श्रीकृष्णजी ११ ३१

यह पढ़ कर तुम की घात है कि—फल, मिठाई आदि स्वादिष्ट भोजन छोड़ कर बुद्ध लोग मांस के पीछे पड़ गए हैं ।

महाभाग श्रीकृष्णजी ११ १०

— द्विदल कन्दमूल त्याग के प्रमाण —

यस्मिन् गृहे सदा नित्य मूलक पच्यते जर्न ।
 श्मशान तुल्य तद्देशम पितृभि परिवर्जितम् ॥ ४३ ॥
 मूल कन सम चान्न यस्तु भुक्ते नराधम ।
 यस्य शुचिर्न विद्यत चान्द्रायण शर्तैरपि ॥ ४४ ॥
 भुक्त हलाहल तेन कृत चाभक्ष्य भक्षणम् ।
 घृन्तारु भक्षण चापि नरो याति च रौरवम् ॥ ११५ पुण्य

अथ—निसने घर मे लोग मूली पकाते है, वह घर श्मशान के समान है, उसमे पितर लोग कभी नहीं आते है । जो लोग कन्दमूल खाते है, जो अधम तर कन्दमूल के साथ अन्न भोजन करते है, उनकी शुद्धि सैरडा चन्द्रायण व्रता से भी नहीं हो सकती । इस प्रकार कन्दमूल भक्षण करने में पाप है तथा निसन रंगन या लिया उसने हलाहल विष खा लिया और जो अभक्ष्य भक्षण करता है, वह अधम पुष्प रौरव नरक में जाता है ।

पुत्र माम घर भुक्त , न तु मूलक भक्षणम् ।
 भक्षणाक्षरक याति रर्जनात् स्वर्ग माप्नुयात् ॥
 अवानेन मया दव, कृत मूलक भक्षणम् ।
 तत्पापम् प्रलय यातु, गोविन्द ! तत्र कीर्तनात् ॥
 रसोन गृजिन चैर, पलाण्डुन् पिड मूलक ।
 मत्स्य माम सुराम् चैर मूलक च विशेषत ॥

मंगभागत प्रमाण खण्ड

अथ—पुत्र का माम खा लेना अच्छा, परन्तु कन्दमूल खा लेना अच्छा नहीं है, क्योंकि कन्दमूल का भक्षण करने से वह जीव नरक

मे जाता है और कर्ममूल का त्याग कर देने में जीव को स्वर्ग की प्राप्ति होती है। भक्त लोग भगवान् श्रीकृष्णदय से कहते हैं कि—
हे गोविन्ददय ! हमने अपने अज्ञान में कर्ममूल खाया हो सो आपकी स्तुति करने से हमारे वे सब पाप नष्ट हो जाय। लहसुन, गाजर, प्याज, काटा, मूली, मठली का मांस और मद्य—इनका विशेष रीति में त्याग कर देना चाहिए।

मृते स्वजन मासि, मृतं चायतं किल ।
श्रुतं गते दिवानां, भोजनं विषते मय ॥
रक्ता मयन्ति तोयानि, अन्नानि पिशितानि च ।
रात्रिं भोजनं शक्यम्य, ग्रासेन माम भक्षणम् ॥
नैराहुतिर्न च स्नानं, न श्राद्धं दयतार्चणम् ।
दानं च विहितं रात्रौ, भोजनं तु विशेषतः ॥
कुम्भं भवेन्माम, तोयं पूतं वस्त्रकम् ।
चर्मं चारिं भव माम, मामं च निशि भोजनम् ॥
उल्लूकाकं माजारां, गृद्धं श्वरं गूफरां ।
अहिं वृश्चिकं गोद्याद्या जायते निशि भोजनात् ॥

(मन्वन्तर्ग में भी है)

अण्यक पुण्य

अर्थ— जिस प्रकार कुटुम्ब में किसी कुटुम्बी ने मर जाना पर मृतक हो जाता है, उसी प्रकार मर्य अस्त होने से भी मृतक लग जाता है, फिर भला मृतक में भोजन किस प्रकार करना चाहिये, रात्रि में जल रुधिर के समान और अन्न मांस के समान हो जाता है, इसलिए रात्रि में भोजन की लम्पटता रगनेवाले के लिए एक प्रास मात्र भोजन करना भी मांस भक्षण के समान है रात्रि में आहुती देना,

करना, धातु करना, देव पूजा करना, ज्ञान दाना मना है तथा रात्रि में भोजन करने का त्याग विशेष रीति से बतलाया है, फिर भी बतलाया है कि उद्भव फल भी मांस है, बिना छना जल भी मांस है चमड़ व बतन में गया हुआ जल, घी, दूध आदि भी मांस है, रात्रि में भोजन करना भी मांस भक्षण है, रात्रि में भोजना करने से गज जीव परलोक में उल्लू, कौवा, शिरी, गिद्ध, मूजर, मय त्रिहू, गोहरा और छिपकली आदि योनियां म पन्न होता है ।

वर भुक्त पुत्र माम, नतु मूलक भक्षणम् ।

भक्षणात् नरक याति, र्चनान् स्वर्गमाप्नुयात् ॥ ११७ ॥

अथ—पुत्र का मांस खाना भग है किन्तु मृत खाना महापाप है, इसके खानेवाले को स्वर्ग अभी नहीं मिलता हमेशा ही नर में निवास करना पड़ता है ।

रक्त मूलक मत्याह तुल्य गोमांस भक्षण ।

इतन्त विद्धि कौतय मूलक मटि रापम ॥ ११८ ॥

अथ—ह पाप ! जितन भी गालक है गाजरादि गाय के मांस सत्य है तथा सफेद (धौली) कट भी मटिरा समान है ।

शुष्काणि भुक्त्या मामानि, भौमानि करया निच ।

अनात चैव मृयास्थ मत त्व तत चरन् ॥

मनुस्मृत अन्वय ११ श्लोक १५५

अथ—सुर्या मांस और भूमि में उत्पन्न जमीन कन्द (कुतुरमुत्ता आदि) का जरा नर भक्षाभक्ष का ज्ञान न हो वहा तक अज्ञान में खाया हुआ का व्रत से शुद्धि कर किन्तु ज्ञान होन के बाद न गायें ।

कन्द मूलाश्च ये भूद मुप्ते देव जनार्दन ।

भक्षयन्ति नरा पार्थ ते वै नरक गामिन ॥ ५७ ॥

गौरम माम मध्येषु, गुडादिषु तयै च ।

मधुमाण मवेन्नून, माम तुन्य गृधिष्ठि ॥५८॥ प्रमाण पुराण

अर्थ—हे पाथ ! जनादा देव शय कर पीठ ज्या मनुष्य क
मूलादि भक्षण कर हे य नरकगामी हे ॥ ५७ ॥

हे युधिष्ठिर ! गौरम, ग्री नख उड के मय मे वा मूग मीठ
विगेरु द्विन्दल यस्तु म मिग कर भक्षण कर ता माम तुन्य हे ॥ ५८ ॥

लहमन गृजनञ्चै, पलणु पिट मूलर ।

करम्मया निचान्यानि हीना निरम वर्णत् ॥

माकान्धेय पराण प्रथम पा ७० ३२ श्लोक १

अर्थ—उहमन, पियान, मूगी करम्म और नख मियाय और ना
नीच यस्तु हे, वह मय वर्णित हे । मियाय शब्द लगन से मालूम होता
हे कि जमीन के अंदर पैदा होनवाले कन्दमू न गाना चाहिये ।

लहमन गृजनञ्चै, पलाडु मूल पिंडर ।

मधु माम सुरा चै, मूल कन्तु जिशेपत ॥ प्रमाण पुराण ११३

अर्थ—प्याज, कन्तुमूल, पिटा, शह, माम, सुरापा—ये न
राने चाहिए ।

स्य भ्रद्वाराणि चत्वारि, द्विदल माम गौरम ।

मधुनालम पूता बुद्ध मन्धान भक्षण ॥ मनुस्मृति

अर्थ—नर के चार द्वार हैं, कथा गौरस के माथ द्विन्दल (याने
दो फाड़ का अन्न) गाना, सहत, जिना छना जल पीना, जमीन कन्
गाना और सन्धान (अचार) भक्षण—ये चार नरकम जानेशा द्वार हैं ।

योऽतिरम्य मुनेपाक्य, माम भवति उर्भति

लोकद्वय विना श्रीक्षित । ५

लाभार्थं हन्यते प्राणी, मासाय दीयतेधनम् ।

उभौ तौ पापकृमाणो, पच्यते रौरवादिषु ॥

उद्गावनार सूत्र अध्याय ८

अथ—जो दुबुद्धि, बुद्ध की आत्मा का ग्लान करके मांस खाता है, वह स्व तथा परलोक दोनों का नाश करता है, प्राणियों की हत्या लाभ के लिए की जाती है, यद्यपि मांस के लिए धन दिया जाता है, इसलिये पशु हिंसा करने और स्वयं मांस का भक्षण करनेवाले दोनों नरक की जग्गि में पड़ाये जाते हैं । उद्गावनार अध्याय ८

अहिंसा ही धर्म है

अहिंसा मत्यमस्तेय ब्रह्मचर्यं सुमयम् ।

मद्य मांस मधु त्यागो रात्रि भोजन वर्जनम् ॥

मारकण्ड पराण श्लोक १६

अथ—मत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और मद्य इन्द्रिया को चशमे करना, मांस, मद्य, मधु, रात्रि भोजनका त्याग, यह सब अहिंसा का विस्तार है ।

जरायुजाटजोद्भिज्ज स्वैद जानि कटाचन ।

येन हिंसन्ति भूतानि शुद्धात्मानाटयापरा ॥

वाह पुराणे १३० अ ५३२ पृ०

अथ—मनुष्य, गा, भैंस, बकरी बगरह और अण्डन जथा सव प्रकार के पशु जाति अण्ड से पैदा होनेवाले, उद्भिज्ज यानी वनस्पति जाति, स्त्रेज्ज अथा पमीन से पैदा होनेवाले गटमल मच्छर आदि ममन्त जंतुओं की जो पुरुष हिंसा नहीं करते हैं, वे ही शुद्धात्मा और दया परायण सर्वात्तम हैं ।

सर्वे वान् तत् कुर्युं सप्रे यनाश्च भारत !

सर्वे तीथाभिपेकाश्च यत् कुपात् प्राणिना दया ॥

अर्थ—ह अजुन ! जो प्राणियों की दया फल नहीं है, वह फल पागे वह नहीं जन और न समस्त यज्ञ होते हैं तथा मय तीर्थी व स्नान करने भा वह फल नहीं न सकते हैं ।

मातृस्वराकाराणि परद्रयाणि लोष्ट्रवत ।

आमृत सर्वभूतानि य पश्यति स पश्यति ॥ ११ ॥ मानव पुराण

अर्थ—जा पुरुष पर-श्री कू मातावत द्रव्य और पर-द्रव्य कू लोह क माफि सभमे और मय जीवमात्र कू अपने माफिक दरे हैं, सा ही देग्नेवाडा है, जेप अवे है ।

अमेध्यमध्ये शीटाश्च मुग्द्राश्च सुगल्पे ।

समाना जीवितप्येषु मम मृत्यु मय द्वयो ॥ १८ ॥ मानव पुराण

अर्थ—विष्टा के बीच म कीड स्वर्गों म इद्र और न्य यन जीवय करि समान है न नोनों कू मृत्यु का मय समान है ॥ १८ ॥

अहिंसा सत्यमस्तेय त्यागो मैथुन वर्जनम् ।

पंच तेषु धमेषु, मय धमा प्रतिष्ठिता ॥ १ ॥

अहिंसा लक्षणो धर्म, स्य धर्म प्राणिहिंसन ।

तस्माद्दुर्मायिभिलोके कर्तव्या प्राणिना दया ॥ २ ॥

कथमुत्पद्यते धर्म कथ धर्मो विनर्द्धत ।

कथ च स्वीयते धर्म कथ धर्मो विनश्यति ॥ ३ ॥

संयोनोत्पद्यत धर्म दया दाने प्रवर्द्धत ।

क्षमया स्थाप्यत धम क्रोधाहोभाद्विनश्यति ॥ ४ ॥

यूनामत्तृणमादीन् पेनतृणश्वहस्तिन ।

पुरपरि श्रन्ति, ते नरा स्वर्ग गामिन ॥ ५ ॥

मुषण दान गादान भूमिदानान्यनेत्रश ।
 नात्तम प्राणदानेभ्य इत्युवाच परामर ॥ ६ ॥
 हम वेनु वरादाना तानार मुलभा भुत्रि ।
 दर्लभा पुरुषा लोकेय प्राणि प्य भयप्रद ॥ ७ ॥
 य तेषामपि दानाना नाल न लीयते फलम् ।
 भीता भय प्रदानस्य क्षय एव न विद्यते ॥ ८ ॥
 एततो भयभीतस्य, प्राणिन प्राण रक्षणम् ।
 एतत काञ्चनो मर्त्तदुरता यमुन्धग ॥ ९ ॥
 या दद्यात्काचन मरु वृत् इषा चैव यमुन्धराम ।
 एरुस्य जीवित दद्या न्न च तुल्य यधिष्ठिर ॥ १० ॥

अथ—हिमा नहा करना, मत्स्य प्राणा, चारी नहा करना, परिग्रह
 ना त्याग—इन पाचा धर्मों म स्वयम गर्भित है ॥ १ ॥

जीव मात्र का प्राण पीडन नहीं करना, सो धम है और प्राणियों
 को पीटा करना अधम है, इसलिय धम क चाहनेवाले पुरुष की सदा
 ही प्राणिया की दया रगना कनत्र्य है ॥ २ ॥

प्रश्न—रम कैसे स्वपत्र हाता है, धम कैसे वत्ता है, धम स्थिर
 कैसे रहे और धम कैसे नष्ट होता है ? ॥ ३ ॥

उत्तर—रम मत्स्य बोलने से उपत्र होता है, दया और दान से
 धम बढ़ता है, क्षमा से धम स्थिर रहता है और क्रोध लोभ से धर्म
 नष्ट होता है ॥ ४ ॥

जूँ, रसटमल, डाम आदि नीवा को आर अरय, हाथी आदि को
 जो पुत्र की तरह रक्षा करते हैं, वे मनुष्य स्वगगामी होते हैं ॥ ५ ॥

मुषण-दान गो दान अनेत्र भूमि-दान, प्राण-दान से उत्तम नहीं

हृत्पद्मा पराशर श्रुति ने कहा है ॥ १॥ पृथ्वी म सुषण-दान, गो-दान,
 नृनि दान गौरह के दानार बहुत हैं, परन्तु जीवों को अभय-दान देवे,
 इस पुरर दुग्म ह ॥ १॥ यद् दानों का फल पात्र नष्ट हो जाता है,
 पर भयभानों का अभय-दान दान का फल कभी नष्ट नहीं होता है ॥ ८॥
 श्रेष्ठ भयसे दुग्मी जीव का भय मिटाना एक तरफ ही और सुषण का
 मद और शत्रु रत्ना की राशिवाली पृथ्वी का दान एक तरफ हो ॥ ९ ॥
 सुषण सेर और ममस्त पृथ्वी का ज्ञान करना और एक जीव को
 बचाना, है राजा युधिष्ठिर । ये यरात्र नहीं होते हैं ॥ १० ॥

यथा मम प्रिया प्राणान्तरैरान्यस्य दक्षिण ।

इतिमत्त्वान् कर्त्तव्यो घोर प्राण बधो बुर्य ॥ १६ ॥

अथ जैसे मेर प्राण मुझे प्यारे हैं जैसे ही और का अपने प्राण
 प्यारे हैं, ममा ममम कर ज्ञानी पुरुष कभी भी मिमा का प्राण बध
 न करे ॥ १६ ॥

सप्तव्यसनो की व्याख्या और उनका फल

शूत च मांस च मुरा च वैश्या पापद्वि चोपे परदार मेरा ।

एतानि सप्त व्यसनानि लोके घोरान्तिघोर नरक नयन्ति ॥

अथ—शुआ, मासाहार, मुरापान, वैश्यागमन, शिकार, चारी,
 और परदारा गमन—ये सात व्यसन हैं मनुष्यों को घोर नरक
 का प्राप्त कराते हैं ।

बौद्ध धर्म में भी हिंसा एव मासादि का निषेध है

मज्झिमनिकाय (मुल्लेख सुत्त)

पाणात्ति पातिस्य पुरिपि मृगालस्य, पाणात्तिपात वेरमणी
 होती परिनिवानाय ।

अथ—नो प्राणी हिंसा करता है उसका हिंसा से विरक्त जाना निवाण क लिए है ।

प्राणातिपात वेरमणी कुमल (मज्झिमनिकाय ममादिठि सुत्त)

अर्थ—प्राणियों की हिंसा से विरक्त जाना हिनसारी है ।

अगुत्तर विनाय श्रौत

पञ्चदश्या भिक्षसवे षण्णज उषामणेन अकरणीया क्तमे पञ्च
सत्थ वाणिज्जा मत्त षण्णज्जा मम षण्णज्जा मज्ज षण्णज्जा
विम षण्णज्जा ।

अथ—भूतान बुद्ध कहते हैं कि बौद्ध उपासना की मांस मदिरा
विष, सचीन प्राणी आदि इन पाच प्रकारक व्यापार करनेका निषेध है ।

गोरम माममध्ये तुमुद्गादिषु तयं च ।

भक्षमाणं मृतं नूनं, मामतुत्य युधिष्ठिर ॥ ५८ ॥ पद्मपुराण

अथ—मांस तथा मूंग आदि द्विदलान्ना के साथ दुग्ध गोरम का
सेवन नहीं करना चाहिये, यदि इनके साथ भी गोरम का सेवन
किया तो हू युधिष्ठिर । मममना चाहिये कि मांस ही खाया है ।

द्विदलं मधु तैलं च, गरिष्ठान्नं तयं ।

भाण्डुष्टं पर्युषितं जघान्नित्यतयात्रती ॥ ५९ ॥

श्रीमद् भागवत महासम अध्याय २ श्लोक ५९

अथ—अती को चाहिये कि वह द्विदल, मधु तैल, गरिष्ठ अन्न
तथा भाण्डुष्ट और पर्युषित चीज को नही खावे ।

लङ्कावतार सूत्र अध्याय ७

माधु गृहस्था को कोद भी मदली या अन्य पशु का मांस खाना
निषेध है ।

धम्मपट (बुद्ध वग्गो)

भक्तज्जुता च भक्तस्मि पतश्च मयनामनम् ।

अधिचित्तं च आयोगो अंत नुद्धान सामनम ॥

निन्दा न करना हिंसा न करना मयम रखना मित भोजन करना,
प्रातःप्रातः करना, चित्त में याग लगाना, यह बुद्धा की शिक्षा है ।
(सुनिधान)

मुसलमान मत में हिंसा और मांस का निषेध

हजारों जानवरों को मारने, मुदा की यात्रा में हजारों रात जागर
और हजार सपने करने और एक एक मनुष्य में हजार बार तमाच
पढ़ने को भी मुदा स्वीकार नहीं करता यदि तुमने किसी नियन्त्रण का
हृदय दुराया ।

जब मुह का एक दाँत निकालने से मनुष्य को अत्यन्त पीड़ा होती
है तो त्रिभार करा कि उस जीव का कितना कष्ट होता है त्रिमय
शरीर से उसकी प्यारी जान निकाली जाये ।

कौड़ी का भी अपनी जान बतानी ही प्यारी है, जितनी मधु, मटिया
छोट से छोटे प्राणी को भी कष्ट देना उचित नहीं है ।

शराब पी, कुगन शरीर का जला, कामा को आग गा, युतग्रान
म रह, लेकिन किसी भी जीव का दिल न दुगा ।

शक्ति शर्यात न

कमल शरीर २६

मुदा जुम करनेवाले को नहीं चाहता ।

। ३३

किसी भी जीव को उमरी तायात से शक्ति शर्यात न

मानव को जपन भाजन पर ध्यान देना चाहिए। हम (सुदा) ने तुम्हारे लिए शार, भाजी फल, मेवा, अनादि सब कुछ पैदा किया है।

गुण ६।३८

जो सड़ अन्य प्राणियों के त्या का व्यवहार करता है, अह्न उन पर त्या करता है।

आनी हमरदी पृ० ५० ६ ५

माम दरगत म नहा लगता, जमीन म नही उगता, बल्कि जाननाग क बन्न कट कर तुदा हाता है, तत्र उसे दद होता है, अगर इसान हो ता दद होना चाहिये, सुदा न हजारा न्यामते दी है, याओ, पीओ और मजे से रहो।

गुण का प्राणियों का मास या रज स्विकार नहीं है।

कमान शरीर साया ८८

० इमानवालो ! तुम शिकार मत खलो ॥ ८८ सुरा ॥

जल सोम रात, जरकाफ भला।

८ ८ सुरा माइलाह पाग बात्रा राम उरपाक १२

गुण ने तुम लोगों को रजक के लिए मेवा व फल अता किया है।

हे मोमीनो ! सुथरी चीन्ना को खाओ निमसे तुमको फायदा हो, शरीर को सुस्मान न हो और न तुम्हारी रियाजत व इयादत में फिनूर आव।

दरजसल शराप, शिकार, जुत तीरपै शैतान के चरगलाने के काम है। इहे छोडो कि निमसे तुम पूछो और फलो। थोड़े से खाद के लिए जान जाया (नाश) करना बनी बेअकली है।

मया जोर मन्दी मनुत प्रके हा।

कि परयक निम तमो नमा जद जहा ॥ तालमगीर

उर्ध्व—धीमे चलो, धन्वि चलो ही रहा, क्योंकि तुम्हारे कदम के नीचे आकर हजारों नाश्वर मरते हैं ।

ईसाइ धर्म में भी हिंसा एवं माल का निषेध १० आज्ञायें

Do not kill and dont injure to anyone Go & learn what this meaneth I desire mercy and not Sacrifice

उर्ध्व—घाटो नहीं और किसी का इजा मत करो, जाओ और जाकर शीश्यों में दया चाहता हूँ, बलिदान नहीं ।

मत्ती की इजा बाब ५ आयात १९

जो कोई तर लहने गाल पर तमाचा मारे तो उसकी आग धायाँ गाल कर दे ।

हत्या न कर, मैघु १ पर (मत्ती बाब १६ आयात १८) यदि तुम उसका अर्थ जानते हो कि मैं कुत्रानी नहीं, किन्तु दया पसन्द करना हूँ तो निरपराधी जीवों को अपराधी न टहराना । (मत्ती बाब १२ आयात ७)

(बन्धि प्रसंग २२)

नू मेरी आग पवित्रता से रह, विचार किसी भी पशु का मार कर उसका मांस मत खा । (१२वें पृष्ठा)

St Matthew ७

तुम्हा कुत्रानी को नहीं बन्धि रहम चाहता है ।

St Solomon

धमाँमा यस्ति अपन पशुजा की रक्षा का भी ध्यान रखता है ।

Poet Wordsworth (Pleasure of life)

Do not mingle thy pleasure or thy joy with the
sorrow of the me nest that pulls

एस किसी भी काय म मुरा और आनन्द मन समझो जिसमें
किसी भी प्राणी को दुःख है

Gensis Chap 1 P २६७

Behold I have given you every herb bearing seed
which is upon the face of all the earth and every tree
in which is the fruit of a tree yielding seeds to you eat
that before meat

मैंने तुम्हारे लिए जमी धूम्रिया, फलवाले वृक्ष और वृक्षों के फल
दिए हैं कि वे तुम्हें मांस का काम दे सकें ।

सर्ग २४

तुम्हें हत्या नहीं करनी चाहिए निःसंशय वे पुण्यात्मा हैं, जिन
पृथ्वी से उपने हुए फलों का खाते हैं ।

— अन्तिम प्रार्थना —

पक्षपात विनिर्मुक्ता मय धमानुरज्ज्वा ।

ये जीवन्ततप्रशुन्यर्थ श्रमायश्चरुतो नृ ॥

म० उषी

— सन्त वाणी —

सन्त नारायण

दोहा—धिक् धिक् एसो धर्म जा, हिंसा करत विधान् ।

धिक् धिक् ऐसाम्मर्ग जो, न करि मिलत महान् ॥१॥

गायन धो मिद्वान्त यह, पुण्य सु पर उपकार ।
पर पीढ़न मों पाप कटु, चटिके नहिं समार ॥ २ ॥

महात्मा कबीर

दी—माम अहारी मानई, प्रपथ रावम चान ।
तारी मगति मति कर, हाइ भक्ति में दान ॥ ३ ॥
माम गाय सो दैट मय, मय पीव सो नीच ।
हुल ना दुर्मति पर हरै, राम कहै सो उच ॥ ४ ॥
माम मछलिया ग्यात है, सुगपान से हत ।
ते नर नरके जाहिंगे, माता पिता ममेत ॥ ५ ॥
माम माम सत्र एक है, मुरगी हिरणी गाय ।
आपि दरि नर ग्यात है, त नर नरहिं जाय ॥ ६ ॥
तिल भर मछली ग्यायके, कांठि गऊ टै दान ।
शशी खरवट लै भर, तौ भी नरक निदान ॥ ७ ॥
बररी पाती ग्यात है, ताकी शही ग्याल ।
जो बररी को ग्यात है, तिनका नीन हवाल ॥ ८ ॥
मर जीर काट निर जीर पूज, अतहाल सो भारी ।
हिंसा कर जीवधर्म मनारत, मानव की बलिहागी ॥ ९ ॥
जहा दया तहा धर्म है, जहा लोभ तहां पाप ।
जहा क्रोध तहा माल है, जहा क्षमा तहा आप ॥ १० ॥
निराल नाहा मताइय, जारी माटी हाय ।
मुई खाल की फुर से, मार मसम हो जाय ॥ ११ ॥

भग माठली सुरापान, जो जो प्राणी खाय ।
 व्रत नम जेते क्रिये, सगरी रसातल जाय ॥१२॥

गुरु नानक

ज रत लगे कपड, जामा होय पलीत ।
 जो रत पीवे मानमा, तिन क्युं निर्मल चित ॥१३॥
 दुर्मति मव जा पीवते, चिप लिपत कमली ।
 नाम रमायन जो रते, नानक मच अमली ॥१४॥
 जो शिर काटे जोग मा, अपना गृह कटाये ।
 धीरे धीरे नानका, बदला कही न जाये ॥१५॥
 जो बीजे मो उगमी, कभू न होये हान ।
 समय पाय फल दत है, नानक निश्चय जान ॥१६॥
 रोना धरे मनावे जल्ला, स्वादत जीव सघारे ।
 आपा देख अरनहीं देख, काही को जस मारे ॥१७॥
 बेट स्तेन रहो मत जुटे, जुठा जो न विचार ।
 सो मयम जरु सुदाई कहत हो, तो क्यो मुरगी मारे ॥१८॥
 अडमठ तीरथ सकल पुन, जीव दया परधान ।
 जिमनू दग दस दया कर, मो पुस्प सुजान ॥१९॥

मौलाना रूमी

सुदी न कर ओ सुदा के वन्द, सुदी है जनतक सुदा नहीं है ।
 सुदी जो वन्द तन अगर तो, सुदा से फिर तू जुदा नहीं है ॥
 जब कहा मैंन या अत्हा, मेरा हाल देख ।
 हुफ्त होता है कि अपना, नाम य अमाल द ॥

श्री तुलसीदासजी

दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान ।
 तुलसी दया न छाड़िये, जय लग घट म प्रान ॥
 तुलसी दया न पारखी, दया आपसी होय ।
 तू नहीं मागे अरर खी, तो तुज न मारे सोय ॥
 सुग दु ग नहिं कोउ रम्तु मु जाता ।
 निज कृत कर्म भोगता सब भ्राता ॥

ब्रह्मचर्य के धारे में दो शब्द

जब हमें ब्रह्मचर्य का पूरा प्रारम्भ या तब यहाँ न तो स्वामी ध्यायियों की और न युवा अवस्था में प्राय को मानना ही या पण्डित आज की दशा जस सबका विषय है । हमन जीवन के मूल ब्रह्मचर्य का छात्र दिया इमी मे हमारी पत्नी तु अवस्था हो गई जिस प्रकार कभी नीव पर हमारन नहीं जा सकती यदि टगाइ जाती है तो वह हमनी कमजोर जाती है कि जग म धरत म हो गिर जाती है इसी प्रकार ब्रह्मचर्य के बिना जीवन नहीं चिक सकता है यदि कभी मुड़ रहता है तो वह न खल मग हुआ रहता है सो भी स्वब्रह्मचर्य के नियमों की समझना चाहिये ।

शरीर में आजम धातु का होना ही जीवन का कारण है । भोजन का सबसे पहिले रस बनता है रस म रसि रसि मे मीम मीम त म भद म हरी हरी म मजा मजा म धाय बनता है । यहाँ वीर्य आजम रुपों मगत तत्र बन का सम्पूर्ण शरीर में समकन लगता है यहाँ घड तथा पुटि कर मन बनता है । यह मान पदार्थ स्वय गिर रह कर मनुष्य की यह का धरत बनत है । इमी म इसका नाम धातु है ।

एक धातु म पद कर हमरा धातु बनन म पाँच दिन उगत हं मांजन क मूड भूत पदार्थ का रस जग में गूँ जाता है और पाचन का प्रत्यय किया में करा हुआ कूड़ा करे मड मूत्र पत्तीना मेरु माखून और शरी आदि व वान में निकड जाता है । बाय बनन ही अपनी पाचन किया नक जाती है और कर

मार पचाय जायस के रूप में शरीर में स्थित रहता है और इस प्रकार उस से लेकर वायु कलन में प्रत्येक धातु में पाँच दिन के दिवाय में छे धातुओं के पाचन में ताम्र दिन गत है। आज के खाद्य हृद्य पदार्थ का तीसरे दिन घीय बनता है। परन्तु चाँगीम सर भाजन से एक भर रस बनता है और उस एक भर कथिर से दो तांग वायु बनता है। प्रतिदिन पक्का एक गर खानवाका मनुष्य भी एक महीने में तीस भर ही पचाय खाता है। अथर्व दिवाय से तीस भर खराक म एक महीने में लेइ तांग वीर्य बनता है यही महीने भर की कमाइ है। एक बार के स्त्री शब्दाय में लेइ तांगे से कम घीय नहीं जाना। अर विचार करना चाहिये कि जो मजान भर का कमाइ एक क्षण में खा जाता है और उस प्रतिदिन इन्ही प्रकार खाना चाहता है उसका दिवाय निरन्तर में क्या ले लगती है ?

जैस ल्ध में से मरखन निरायन में ल्ध का मयना धर इख में से रस निकालन में इख का निचायना पड़ता है वैस हा एक बूँद घीय को निचायने में सारे शरीर को मयना या निचाइ लाना पता है। जैस धी निचायन के बाद दुध सार हान निरन्तर और इख का दण खायका और चूर-चूर हा जाता है वैस ही घीय के निरन्तर से शरीर भी सार हीन निरन्तर खोखला और चूर-चूर हो जाता है। शरीर की तमाम नाशियाँ लगी पड़ जाती है और प्रत्येक दिवस में उदासी छा जाती है। वायु के पनन में ही मनुष्य का पनन है और घीय के धारण में ही मनुष्य का जीवन है। घीय धारण का ही मन्त्रय कर्ते है। मन्त्रय की सारे पुग्दार्थों का मन्त्र है अथर्व मनुष्य मदा नीराम और सुखी रहता है। इन्ही से अकार जग जोर सृयु में रसा हानी है अन्ही से हृष्ट पुत्र ब्रिजि और धर्म परायण सन्तान उपन हानी है इन्ही से मनुष्य दाध जीरी मृति सम्पन्न मलवादी जिनशिय और धम निर हाता है अन्ही से मजन और ध्याय की योग्यता प्राप्त हानी है अन्ही से याग के साधना में हथि और सिद्धि प्राप्त होती है। अन्ही से मनुष्य निमय और निमघ हाकर जगत का सेवा कर सकता है और इन्ही के चर से अन्त में परमाना तत्व का भी प्राप्त कर सकता है, यहाँ से प्रथम परम साधन है।

वीर्यनाश और उससे हानि

वायु का नाग मैथन से होता है। (१) किमी स्त्री का किमी अवस्था में अगण करना (२) उपरं शुर्णा के रूप का वणन करना स्त्री सम्बन्धा चर्चा करता

...गना शृङ्गार रस के प्रया का पन्ना आदि () क्रिया के साथ तारा
 ...श्रुति मन्त्रा (५) क्रिया का सुरा दृष्टि से भवना (५) स्त्री स एकान्त में
 ...कना (६) स्त्री का प्राप्त करने क श्रिय मन में सक्रिय करना, (७) स्त्री की
 ...श्रिय प्रयत्न करना और (८) प्रत्यभ मन्त्रा करना—य आठ प्रकार के
 ...विद्वाना न बन्ता है। माधु का कामनावाग का ...न चार् म अवश्य
 ...ना चाहिये। वस्तु से लोग हागी के अवसर पर भौना ...सारी सले का स्त्री
 ...पत्नी या पद्मिनी के साथ पाग रग रग करत है ...मका भा एक प्रकार
 ...मैयन मममना चान्दिय। मर स्त्री पुर्या का ...म पापाचार से अवश्य बनना
 ...। पर स्त्री के साथ तो मैयन करना मवधा निषेध है ही पन्तु अपनी स्त्री
 ...साथ भी इन आठ प्रकार क मैयनों स मुमुक्षुओं का वचना चान्दिय स्त्री के किनी
 ...चार क मन्त्रा म भी वाय नाग होना है। प्रत्यभ मन्त्रा क अनिरित अन्य
 ...प्रकार के मैयुता में वाय स्वस्ति हाकर आठ वापा में आ छरता है जिसस
 ...घातु दोषय स्वप्न विकार प्रमेह मूत्र कृच्छ यन्मा आदि अनेक प्रकार की
 ...बीमारियां हा जाता है। आनक की सम्यता में तो मयुन * और भी अनेक
 ...जनमगिक उपाया का आविष्कार हुआ जिनम प्रत्यभ सहयाम क मन्त्रा हा भीषणता
 ...के साथ धाय नाग होता है और य पापाचार उत्तरोत्तर बन्ता जा रहा है फल
 ...भी हाया हाय मित्र रहा है मन और रगर दुख हा जाता है गा पिचक जाते
 ...हैं चन्ग पाग पद जाता है स्मरण शक्ति ...नी जानी * मन्त्रा में चक्र
 ...श्रान गले ह हृदय कमजोर हो जाता है और श्रान गला है शुषा मारी
 ...हो जाता है जी धवडाता है मुख स नींद नही आता है और अल्प्य परे
 ...गन्ता है माराग यह है कि—
 आयुर्वेद शास्त्र में अर पाण्डु रक्त पित्त गन्ध ना का मन्त्रा भद्र मूच्छादाह
 अग्निमाष जोर वात यदि रोग का कारण धाय का अधिक नारा होना ही
 रनगया है। पाशाण्य शक्यता का भा मत है। एणी अवस्था में मनन ध्यान ता
 हा हा कम मकर है। अतएव प्रदक मुख क मन्त्रा मनुष्य का चाहिये कि व
 रत्रय ब्रह्मचर्य का पाग्न करें और अपनी मन्त्रा म कथाय। माता पिता क
 कृतव्य है कि वे गमाधान काठ म ही वही मावधाना क माय वाक का
 र्जवन में ब्रह्मचर्य क प्रनाय ...न का उपाय करें। जब गम

हा तब माता पिता कभी रिमा प्रहार का शर्रा बोलें न करें गुरे उपायानात्क
 न पढ़ें । न दुर नाटक गिनमा देखें शूद्रा न नपा अदराउ चित्र न देखें धर
 गात्र रा भय्ययन करें भक्त और धानिफ चार गाथाय मुन और पढ़ें । गभ काउ
 में माता को जैसा चरा हाता है वैसा हा उसका सन्तान बनती है । इम बात को
 प्राय्य जोर पागात्य सभा विज्ञान वंताभा न ग्वाकार किया है ।

जाजन्त क स्कूल कालेवा का तो वरा ही युगी ग्गा ह । सौभाग्य वरा
 शायद हा काइ एसा स्कूठ या कालेज हागा जर्ग बान्क दुगारण न करत हों ।
 वड़े ही ग्द का विषय है कि भारत अ भावा आगाय्यक भारत जानी क प्रिय
 वाक्या बी जीवन गति शिशा नाम पर युगी तरफ स नर हा रही है । प्रथम तो
 पा-नात्य शिशा का विषला गग ही नाक का अपन धम स गिरा ग्गा ह । दूसरे
 आजकल के स्कूल कालेवा का विषय प्रधान गिगडा हुआ वानावरण उनरे जीवन
 की प्राय समस्त गति का विगाइ ग्ता है । इमारा ज्ञानि क जावन में यह एक
 बड़ा भारी घन ग्ग गया है । यदि ग्गस रग्गा न हु ता बड़ा अनथ हा जान की
 आशना है ।

‘सिनेमा की वदी’

बनमान काठ में जा सिनेमा नाटक तादि अतिगय आशक्ति में देखा जाता
 है वन काम विषयक तीज अभिगवा प्रग्ग कर्म का साधन है ग्गसमें ग्गारय को
 जा गहरा धरा ल्य कर वनना क स्पा/य और सादय का गग्ग हाति पढ़े-चाता है
 और उत्तगन्त अवदाचार की वृद्धि में सगायना मिग्ता है क्योकि गिनमाभा का
 अधिकतर प्रायोजन चित्त का विचगित्त ररना हाता है जिसग वनता अधी होकर
 पनगों की तरह उनके नाठ में फगनी रहता ह ग्गसमें राष्ट्र ग्ग जाति की जा
 हाति टा रहा है बड़ अवर्गनीय ह अन प्र-दर माता पिता का वनव्य है कि
 बड़ स्वय उनम ग्ग और अपन वाक-वर्षा को इत अगन प्रगति स राउ अ-बया
 उनका क्गुआ पठ भावा सन्तान का भागना हा पड़ेगा ।

ब्रह्मचर्य रक्षा के उपाय

(१) बाल विवाह का समयवा त्याग कम से कम अठारह बप से

पहले लड़के का और चौदह वर्ष से पहले लड़की का विवाह
भू कर भी नहीं करना चाहिये ।

उच्च विवाह कभी न होने देना चाहिये ।

(३) ब्रह्मचर्याश्रमों की स्थापना करनी चाहिये, जिनमें बाल्य व
ब्रह्मचर्य की रखा या बड़ा बड़ा प्रयत्न होने से साथ ही उच्च
धर्म मूल्य ब्रह्मचर्य की शिक्षा भी ली जाय । कम से कम
अठारह साल की उम्र तक बाल्य का उमरमें रहना
अनिवार्य हो ।

(४) लड़के लड़कियों को मगाई पहले न की जाय ।

(५) बालक बालिकाओं को भयभीले रूप में और गहन त्रिस्तुल ही
न पहुँचायें जाय ।

(६) शृङ्गार रमके मस्त्रुत या द्वितीय शाय या नाटक उपन्यासादि
ग्रन्थों का प्रचार यथामात्र रोक जाय । रम से कम छाती
उम्र के बालक, बालिकाओं के हाथ में एसी पुस्तकें कभी न दी
जायें और न विप्राश्रिया को माहित्य की दृष्टि से ही एसे प्रव
पढाये जाय ।

(७) शृङ्गार रम प्रधान नाटक मिनेमा कभी न रगें जायें, उमसे कम
बालक, बालिकाओं को कभी न रगलायें जाय ।

(८) उच्चोच्च पदार्थ न रगाने चाहिये । मिच रम ममाले लेल
अचार रगनाई, अधिक मीठा और अधिन रम चीन न रगाई
जाय । भोजन रग्न चराक रगाया जाये, भाजन सत्रैय सादा
ताजा और नियमित समय पर रिया जाय, किसी भी मादक,
नशैली वस्तु का सेवन न रिया जाय ।

(६) यथा साध्य नियम गुली हवा म प्रतिनिदि मवेरे सध्या ११
पदल घूमा जाय । रातः

(१) रात को जल्दी सोया जाय और प्रात काल ब्रह्म मुहूर्त में यथा
मर्यादय मे कम से कम एक घण्टा पहले अवश्य उठा जाय-
सात समय पशात्र रख हाथ पाव धोकर के भोवें । स्त्री औस-
पुरुष एक पलंग पर या एक साथ कभी न सोयें । रात को
भगवान का चिन्तन कर ।

(११) कुमगति सत्रथा त्याग दी जाय । स्त्री सम्बन्धी चर्चा कभी न
की जाय । इस प्रकार स्त्री भी पुरुष चिन्तन का त्याग करें ।

(१२) दम्पति (विवाहित स्त्री पुरुष) को छोड़ कर अकेले मे दूसरे
स्त्री पुरुष कभी न बैठे और न परान्त मे बात चीत करें ।

(१३) स्त्रिया की आर कभी न देगे, यदि चिन्त्रि जाय तो तुरन्त
मातृभाव कर लें ।

(१४) नियम मत्सग किया जाय । मद यथा का अध्ययन किया
जाय त्रिपय इपाय निरुक्ति रूप प्रार्था का स्वाध्याय हो ।

(१५) शौकीनी वस्तु सत्रथा त्याग दी जाय । यह स्मरण रचना
चान्दिय कि सजागर और शृङ्गार मे काम वासना जागृत
होती है । शृङ्गार वास्तव मे इसलिये किया ही जाता है कि
म दूसरा को सुन्दर दिग्याई दू । शृङ्गार करनेवाला स्वय
डून्ता है और दूसरा को डूयोता है ।

(१६) शत्रु पुलेल कभी न लगाया जाय, फँसान से न रहे चटक-
मटन छोड़ दो जाय । जाल न रख जाय, बार-बार दपण मे
शौर्य करते मुग्य न देखा जाय, ओठों का लाल करने के लिये

पान न गवाया जाय, आम्र आदि का सत्रन न किया जाय,
दूधोत्तम औषधिया का सेवन न किया जाय ।

१) मूत्र त्याग और मल त्याग के बाद इन्द्रिया का शीतल जल से
धो डाले । मल मूत्र की हाजत न करे ।

२) यथा साध्य ठण्ड जल से नित्य स्नान किया करे ।

३) नियमित व्यायाम करे, हा मर तो नित्य कुद्ध जामन और
श्रणायाम का अभ्यास भी किया करे ।

४) कौपीन या लंगोटा अप्रच्य रखा जाय ।

५) भगवान की मूर्ति का प्रेमपूजन करने करे । मन्त्र माधुजा
और महापुरुषा की मन लगा करे गवा करे ।

६) प्रनिमित्त नियमित रूप से मत्स्य शास्त्रा का स्वाध्याय करना
चाहिये ।

७) व्यभिचारी (कुशीला) एवं शर्माही पुण्या की संगति न
करे, वैराग्य की भावना उठाने माधुजा की संगति करना
हा उत्तम है ।

८) महापुरुषा के चरित्र का ज्ञान करे, महान से कम से कम
चार उपवास करे ।

९) भूल कर किया व महावास म न रहे एवं जन्म स्त्रियां एवं
होकर राग भाव रूप गान करती हा, एसे भेजे म न जाय,
स्त्रियों व मनोहर जङ्ग को न देखे, प्रेम भावपूजन किया से
वातागप न करे, किया के नृत्य, गायन आदि न देखे न सुने ।

१०) पून साल म भोगे हुए भागा को याद न करे ।

११) कामादीपक गरिष्ठ आर भर पट भोजन न करे, शरीर को
मल मठ कर स्नान न करे, मन बचन, काय से काम विकार

रूप चित्रा न करे। पल्लव पर या कामल पिल्लर पर न मीयें
निमी की हमी चित्रणी न करे।

- (२८) नीच स्वाम लेकर के वीय को न छोड़, जहा तक होये कपड कं
अपन हाथों मे घुटाट करे।
- (२) आसीनतापूरक अरुप आरम्भ सवे। विशेष परिष्कार बडां
की चित्रा न करे।
- (३) सा वाचन मर्यादा हथिनी घोड़ी, ऊटनी आदि पर न घंटे
- (४) होली न मेलें, उनसे परिणाम मलीन होता है, धीयः
मवलिन होता है।
- (५) नी गडी मय-अस्त हान के पूर आहार जल ले लेना चाहिये

मुमुक्षुओ के दिन चर्या की भावना

मुमुक्षु जिन समय म कोइ काय करता हो, उस समय पर
उत्तम भावना का लय का काय क अनुसार बनाना चाहिये, क्योंकि
उत्तम भावना का चित्तवत् आत्मा की परम्परा महान उपर
होता है। यथाथ म दर्शन म आव ता भावना पर ही जीव
मसार और मोक्ष का निमाण हा मरता है, इसलिये मशेष म र
उद्ग लिया जाता है।

१—प्रातः साठ उठ कर मलमूत्र नी बाधा से निवृत्त होकर एसा
विचार करना चाहिये कि किस प्रकार शरीर की बाधा दूर होने से
सुख मादुम होता है, उस प्रकार उनमे अनन्त गुणा सुख क्रोध राग
द्वेष मोह रूपी भावा की बाधा से निवृत्ति करूंगा तब ही मुझे
आत्मिक शांति मिलेगी। धर्य है वह दिन कि किस दिन मे अशुचि
मण्डार रूप शरीर से मोह छोड कर इस शरीर द्वारा सत्त्वम

(तप आदि) म लग जाईगा, तब ही मुम मन्ने मुम के प्राप्ति हो सकती है ।

२—दांजुन करते समय तिम प्रकार मुम का माप करता हूँ, उस प्रकार से आत्मा का स्वच्छ करूँगा यह दिन ध्य होगा—जैसे मुम का स्वच्छ करते हुये आनन्द होता है, वैसे ही आत्मा के अनन्त गुणों की अग्रदत्ता को स्वच्छ करूँगा, तब आनन्द होगा ।

३—स्नान करते समय तमा विचार कर कि—जैसे शरीर का मल दूर करता हूँ, वैसे त्रिपय कथाय आदि आत्मा का अतरङ्ग मल का मैं दूर करूँगा, यह दिा की घनी ध्य होगी ।

४—कपड़ा पहनाते समय तमा विचार कर कि तिम प्रकार शरीर की रक्षा भावन से और त्मसी गाभा यन्त्राभूषण से करता हूँ, तम प्रकार आत्मा की रक्षा त्रि आदि से और शाभा शात ध्यान से करूँगा, व दिन की घनी ध्य होगी ।

५—स्नाई करते समय तमा विचार कर कि—तिम प्रकार शरीर की स्थिति त्रिवान के त्रिय भावना करता हूँ, तम प्रकार आत्मा का स्थिर करने के त्रिय ज्ञान रूपी। त्रमन त्र भोवन त्रि त्रि करूँगा, वह त्रि की घनी ध्य होगी ।

६ तिम प्रकार त्रमोइ घनान म सायधानीपूवत (निर्गीरण से) मैं मुद हाथ से करता हूँ तमा त्रसाइ वाइ अथ पुत्र्य द्वारा कराने से होती नहीं है तम प्रकार पाप रूपा काय का यत्नाचारपूवक मैं मेरे ज्ञान से नहीं हटा कर और अथ के दोष का त्रयवा की त्रि को जहाँ त्र मैं त्रही हटाउगा, उहाँ त्र मुक्त आत्म शान्ति की प्राप्ति त्रही होगी, तमी भावना का निर्गीरण जो त्रि मुक्त हागा, उग त्रि की घनी ध्य होगी ।

७—भोजन करते समय एमा विचार करके पर पदार्थ के स्वाद्य-स्वाद्य म अत्यन्त तन्मय होकर राग में पॅमा न इसलिय मुझे धिक्कार है, यथाथ म निस दिन राग का परिहर आत्मिक सुख के स्वाद्य में लीन होऊँगा, वे दिन की घटी ध्य है ।

८—वतन साफ करते समय एमा विचार कर कि—जिम प्रकार वतन को साफ कर उनला करता न, उस प्रकार मेरी आत्मा के मल को सम्यक् ज्ञान रूपी जल से और तप सयम आदि रास से साफ कर शुद्ध करूँगा, वह दिन की घटी ध्य होगी ।

९—पर मे से जैसे—कूटा भाटू से बाहर निकाल कर घर को सुदर (स्वच्छ) करता हूँ, उमी प्रकार मेर आत्मा-रूपी घर म रागादि-रूपी कूड का ज्ञान और ध्यान-रूपी भाटू मे दूर कर आत्म रूपी घर का स्फुटिक मणी जमे सुन्दर करूँगा, वह दिन की घटी ध्य होगी ।

१०—निस प्रकार नकान पर जाकर सावधानीपूर्वक नुस्मान न हो, धन की प्राप्ति करन म लेन देन (व्यापार राजगार) कर नफा हाते ही गुश होना न उमी प्रकार मेरी आत्मा का ज्ञानादि वन का सावधानीपूर्वक नुस्मान नर्हा हा और ज्ञानान्ति की प्राप्ति करने म शास्त्राभ्यास-रूप लेन देन कर ज्ञान की वद्धि-रूपी नफा हाने से गुश होऊँगा वे दिन की घटी ध्य होगी ।

११—निस प्रकार तिनोरी म रखा हुआ धन को मैं जहा तक सुपात्र दान ज्ञान उनति मे नर्हा लगाऊ गा, वे धन पत्थर के समान है, उस प्रकार मेर ज्ञान रूपी धन को जहा तक मैं मचारित्र अथात् तप व्रत समिति गुप्ति म न लगाऊ गा, वहा तर वे ज्ञान पत्थर जैसा शुष्क ज्ञान से मेरा कोर्न कल्याण नर्हा होगा ।

१२—जिस प्रकार गोश्याम म भरा हुआ माल की मैं मत्त चिन्ता करता हूँ, उस प्रकार शमीर-रूपी गोश्याम म चतन रूपी रत्न के माल की चिन्ता करूँगा, वह त्तिन की घनी धन्य होगी ।

१३—जिस प्रकार काष्ठ मनुष्य अपना नफा नुस्मान रूपी व्यापार राजगार को निरीक्षण नहीं करता है वह निश्चय से दुष्मी हाकर हानि में चला जाता है, उस प्रकार जो जोड़ आत्मा अपन पुण्य पाप रूपी लाभ हानि का मत्त विगीक्षण नहीं करता है, व निश्चय से महान दुग्द जैसी नरक गति में चला जाता है ।

१४—जिस प्रकार रस्स की नाटिम मिलते ही मरा राता रात दिन मेहनत करने तैयार करता हूँ, उस प्रकार मौन क पगाम रूप बुद्धि का मफ्त बाल की नाटिम मिलते हुये भी मैं लेश मात्र भी आम कयाण नहीं करता, इमलिये मुझ विचार है ।

१५—जिस प्रकार मैं मेरा सम्प्रधी कुटुम्ब करीब, परिवार, राज, कीर्ति, मान, जाकर, प्रतिष्ठा, वैभव भोगादि माममी की रात त्तिन चिन्ता करता हूँ, उस प्रकार मैं मरा चतन्य-रूपी ग्वाने की देवभाण करूँगा, वे दिन की घनी धन्य होगी ।

१६—मैं पर दोष करने में तितना प्रवीण हूँ, जतना मैं मरा टाप देगने में प्रमादी हूँ, इमलिये मुझ विचार है, जिस त्तिन मैं पर क गुणा को आर अपन लपा का देगूँगा, व त्तिन की घनी धन्य होगी । हे भगवान ! इम प्रकार मेरी भावना का दिन मुझे शीघ्र प्राप्त हो इमलिये मैं आपर चरण में चार बार नमस्कार कर प्रार्थना करता हूँ, इम माह रूपी गानी का मैं स्वयं धैल बना हूँ और उसका रजन ग्राते उठाते मैं दफ गया हूँ, इमलिये तुम्हारी कृपा त्तिन ही मतपथ का माग श्रतान चाली हा, एमी भावना भाता हूँ ।

पद्मासन अथवा पर्यङ्कासन करके

प्रातः काल चार बजे उठ कर, हाथ, पाय, मुह को शुद्ध कर, शुद्ध वस्त्र पहन कर एक घण्टा ब्रह्म मुहूर्त में आत्म चिन्तन करना प्रत्येक स्त्री पुरुष का कर्तव्य है। पूर आर उत्तर दिशा में मुह करके निम्न प्रकार आत्म चिन्तन करना चाहिए।

‘सद्बोधामृत’

मैं आत्मा से जो बाल्य पदाथ है, वे कदापि भी मेरा नहीं हैं और मैं उनका कदापि था ही नहीं, फिर भी मैं मोह में अज्ञानी होकर मान बैठा था, इसलिए तो मुझे दुःख रूपी सताप का लाभ ही रहा अब मैं निश्चय से बुद्धिपूर्वक उन सब का सघ छोड़ कर मोक्ष मार्ग में निगड्य होकर विचार करने का पुम्पाथ करता हूँ अथवा मेरे आत्मा जो मेरे आत्मा में स्थिर करता है।

जो जीव अपने चित्त को एकाग्र कर ध्यान में स्थिर करता है, वे जीव निश्चय से समाधि को प्राप्त होता है अपना निच निमल ज्ञान दर्शनमयी आत्म भण्टार का अवलोकन करता है।

मेरी आत्मा सदा एक अविनाशी, निमल, अचल, केवलज्ञान रूप है और मेरा आत्मा से भिन्न सदा पन्थाथ विनाशीक अस्ति सदा एक समान नहीं रहनेवाला अशुचि दुःख के कारण रूप होने से मैं उनका परित्याग करता हूँ। जो आत्मा सदा ध्यान योग से अपने अन्त करण को निमल कर शुद्ध चरित्र में प्रयाण करता है, उसको इन्द्रियो के भोग बन्नापि पराजित नहीं कर सकते हैं।

जहाँ तक मसार में भोगों की बाधा है, वहाँ तक ममुष्य को कदापि भी मुक्त नहीं हो सकता है, पितनी जितनी इच्छा बढ़ती

जाती है, उतनी-उतनी दुःखों का विसार करता चला जाता है, जैसे-जैसे इच्छा पूरी होती जाती है, वैसी-वैसी इच्छा विशेष तीव्र-रूप होती जाती है, जिसका दुःख से छटना है, उसका अथवा इच्छा का निरोध करना चाहिए अथवा दुःख का स्मृती करना ही तो इच्छा का कमती करो और इच्छा कमती करनी हों तो इच्छा को पूरा करने की इच्छा को त्याग कर, इच्छा-रूपी आग में विषय रूपी घी की आहुति न करो, किन्तु मन्तोष रूपी शीतल जल का सचय कर इच्छा का बुझानी चाहिए, "इच्छा निराश तप" "तपसा निररा च" श्रुति का धारक है और निररा में ही मकर भाव बढ़ता है और मकर में ही शुद्ध आत्म तत्व की प्राप्ति होती है।

विषय सुख की निराशा होना, यही सच्चे सुख की प्राप्ति का उपाय है अथवा विषयों की चिन्ता छूट गिना मन्च सुख की प्राप्ति कमी सम्भव नहीं है, धन्य है वे महापुरुषों का जिसने स्वेच्छा में विषय सुख की चाँट को त्याग किया है।

सब जीवों में प्रति प्रेम करो, दूसरों की निन्दा मत करो किन्तु दूसरे का गुण प्रशंस कर, प्रिय हितमित्र पचन वालों, सत्पुरुषों की सगती करो।

नीच और कुल्यमनों से सदा दूर रहो, धर्म की जड़ न्या है और पाप की जड़ दुःखमन है।

मत्र प्राणिया को अपने समान, पर धन पथर समान और पर-श्री माता समान समझो, विद्या आत्म ज्ञान के लिये, वन दान के लिए, और शक्ति दूसरे जीवों की रक्षा के लिये लगाना चाहिए। लक्ष्मी चक्रल (अम्बिर) है, आयु पानी के बुलबुल समान है, यौवन बिजली के चमत्कार समान है, इसलिये धर्म का शीघ्र धारण करो।

समारी पदार्थों के समूह में दाढ़ता छोड़ दो, समारिक विषयों से विरक्त होकर आत्म-कल्याण के भाग का प्रार्थन करो और निमल ध्यान से परिणाम में आगे बढ़ कर मोक्ष की प्राप्ति का पुरुषार्थ करो, मदा विषय और प्रमत्तपूर्वक सत्संग, सत्समागम करो, निर अभिमान दयालु हृदय, और नम्र वाणी से सबके साथ व्यवहार करो, आत्मा-परमात्मा में फर्क नहीं है तो फिर मनुष्य मनुष्य में तिरस्कार क्यों ? आत्म-धर्म में फर्क नहीं है तो सम्प्रदाय-रूपी बाधा (पाप) क्या ? अर्थ का तिरस्कार करना वह अपनी आत्मा का तिरस्कार करना है, उसे जीव ने आत्मा का पहचाना नहीं है ।

दूसरे समय पाप न करने का निश्चय करना वे प्रायश्चित्त है, ज्ञान से बुरी बात मत सुनो, अर्थ से बुरी चीज मत देखो, मुग्ध से गराव बात मत कहो, हाथ से रसायन काम मत करो, उसे गराव रास्त मत जाओ, मन में गराव चिन्तन मत करो, बुद्धि से गराव विचार मत करो, किंतु मरिचा की तरह ज्ञान शीलता, पृथ्वी की तरह महान शीलता, सूर्य की तरह उत्पन्नता, वायु की तरह समानता, चंद्र की तरह शीलता, पशु की तरह नम्रता और गाय की तरह वात्मकता सीखो । बाह्य पदार्थ (धनादि) अपना शत्रु है, यह मन को चञ्चल करता है । इसलिए आध्यात्मिक धन की प्राप्ति करो, जिससे मन में शान्ति होव ।

जिस मनुष्य में काम कामना भरी है, वह कदापि शांति, मानसिक और आत्मिक शान्ति प्राप्त नहीं कर सकता है । जिसने अपना मन और इंद्रियाँ नो बरा किया है, वही आत्मा पर विजय प्राप्त कर सकता है । अभिमानी और लोभी कदापि शान्ति नहीं पा सकता है, तो भोग के क्या से ? अभिमानी जीव को सब दुःख

दिव्याहृते ई, क्वाचिन्नका मान राहिए और वन नही मिलने से क्षण-क्षण म रोध करता है, क्वाचि पर पन्था म उनका मन्त निराम है । ज्ञानी वस्तु स्वरूप को जानता है, इमण्ड अन्तःकार नही करता है । जीव क्यों अपन व्याधिर नाम और कानि क णि नौटवाम कर पाप बाधता है ? जीवन तो रात्रि की छाया, पानी का बुदबुदा, चित्त की चमक समान क्षणभंगुर है फिर भी यह जीव नाम आन्दि क मगड् में आम्बिर शान्ति का नाश करता है । नाम तो चक्रवर्त्ता का भी रहा नहीं है, ता तेरा क्या मूत्र है ? जो वस्तु प्रति प्रथम प्रीति होती थी, उनर प्रति प्रीति रूप भाव का नही पठाना उनका नाम वैराग्य है । वैराग्य की जननी विवेक मत्त का साजन है कि जो परम्परा भास का कारण है । शरीर व्याधियों की बड है, वह अपवित्र से भरा निन्दारूप है, यह एक क्षण भी विना म्बर लिये नाश हो जाता है अथवा राग शीण जरायवरा को प्राप्त होता है । मलमूत्र, रक्त पित्तादि दुग्धित वस्तु से भरा पन्थ है । नाशवान है, प्राण निरल जान क रात्रि लक्ष्मी क टरङ्क के समान वैराग्य भार-रूप है । नर द्वार से मल तथा पसीना मन्त ही छाड़ता है, नाग्न, केश विना टुन्डा से घटते है एक क्षण भी आह्वानुमार रहता नहीं है, देखमाल करते भी आंग, शान, दाँत आदि मराम्य हो जाता है । दाँत आने और जाने दोना समय मे टु ग दते है ।

जो मूत्र मनुष्य शरीर को साफ करता है, साजुन, इत्र, तल, पाउन्ट आदि लगाता है, मदा सुन्दर वनान की चेष्टा करता है, पकवान आदि हा सुन्दर भोजन कराता है, नात्य मिनमा आदि लिखाता है, मोन्टगाभी म पुमाता है, मोना चाँनी, चराहरा पहनाता है, रगमी गम मलमल, मरगमल मुलायम, रूपटा भाति

का पहनाता है, पढ़जाति मुतायम वस्तुओं में मुलाता है, वस्त्र आभूषण से मनाता है, ठण्डा गम ममालेदार पिलाता है, दर्पण में देखा कर नाच नचाता है, टीपनाप करके अपने का सुन्दर बनाने की चेष्टा एव मोह बढान का अत्यन्त प्रातिरूप राग उपन करने का प्रयास करता है, किन्तु आत्मा का ध्यान कर निर्मोही होने का उपाय करता नहीं है यह कितना आश्चर्य है ? नाशयत्त वस्तु के लिए तो देखभाल करता है, किन्तु शाशयत्त वस्तु के लिए किञ्चिन् मात्र प्रयास करता नहीं है । जिस समय शरीर में व्याधि होती है अथवा मरण होता है, उस समय माता, पिता मित्र, पुत्र, पुत्री, भगनी, भाई, पत्नी, सगा सम्बन्धी कोई सहायक होता नहीं है, फिर भी मूढ (मूर्ख) जीव अपना मान कर सारा जीवन आकुलता रूप आग में फेंकता है, किन्तु अपने हित के लिए किञ्चिन् मात्र भी विचार करता नहीं है, यह कितना आश्चर्य है ? अपने बढापन दिराने का और अपनी बात सब कोई स्वीकार कर ले, एमी भावना रूप विचार नहीं करना, किन्तु सदा सत्य मधु प्रेमपूर्वक शत्रुओं का च्यारण करना चाहिए । किसी के दिल को आघात करनेवाले शत्रुओं का च्यारण मत करो ।

विद्वान् इन्द्रिय पर काबू करो, अनावश्यक मत बालो, वहाँ तो हितकर मिठा भलाइ रूप बोलो, किसी का जहा तन हो भला करो, किन्तु अहित करने का विचार कदापि मत करो, उनसे मन अशुद्ध हाता है और उनका मस्तर बहुत काठ तक दृढता नहीं है । जो तुम आकाश पर थुकीगे तो वह थूक तुम्हारे सिर पर ही पडगा, जो कीचड में पत्थर फेंकीगे तो कीचड तुम्हारे मुह पर उडल कर गिरेगा, हवा में धूल फेंकने से तुम्हारा आँव में गिरेगा, जो कोई दूसरे को तकलीफ देना चाहता है, वह अपने शिर पर आपत्त उठाता है, जो दूसरे को

सुकमान करने की भावना करना है, वह जीव सुख का ही सुकमान करता है जो कोई दूसरे की भूठी अफवाह उठाता है, वह अपना ही बुरा कर रहा है। कहावत भी है—“भडा करगा भडा पायेगा” “बुरा करेगा बुरा पायेगा”, इसलिये सदा अच्छा चिन्तन, उनका मनन कायम रखना चाहिये कि निम्नसे आत्मा में अच्छा मस्कार बन जाय और मनम बुरा निकल जाना ही आत्मा का श्रेयसाग है।

॥ ॐ शान्ति ॥

सुख शान्ति

बेड बुरान पढ नित पोयी, चिनगणी अभ्यास करे ।
 कर माला शुभ तिलक गला कर, परमप्रद सा ध्यान धरे ॥
 रह कर दश विदश गेह पर, या निर्जन मन बीच रही ।
 क्या जीवन सुख पाया तुमने, जो मन में है शान्ति नहीं ॥
 पण्डित पद धर नानि रहा कर, लोगो को उपदेश कर ।
 भीतर की माया नहीं त्यागी, दुःखों से निज गेह भरे ॥
 करे सुशामन धनधानों की, लालच में आलाप रही ।
 जन्म वृथा नर पाया है, जो मन्तोपामृत पिया नहीं ॥
 सुन्दर सेन प्रामाद मान मन, फर्नीचर से गढ सज ।
 धन जन भूषण मान प्रतिष्ठा, है सरर घर मान बन ॥
 पुत्र मित्र दाग तन सुन्दर, फुटी नहीं है एक कहीं ।
 जो भी क्या जीवन सुख पाया, जो मनो में शान्ति ॐ ॥

छोड़ चल मन्यास धरे, परत की चोटी आन खंडे ।
 गिरी गुफा जगल में रह कर, नम्र त्रिगम्बर रूप धर ॥
 कौटि वर्ष तप कर माधना, दृढ़ चलाय दृग्य मही ।
 क्या माधु पद पाकर पाया, जो मन में है शान्ति नहीं ॥
 बाहर से हम साधु रहार, भीतर जाग घघरती है ।
 आकुल व्याकुल परिणामी, अग्नि तनिक नहीं घटती है ॥
 वायु क्रिया में धर्म मनाव, भान्ति कटापि जाय नहीं ।
 व्यर्थ क्रिया ममज्ञो मरती, जो चित्त भासा में शान्ति नहीं ॥
 सुख दुःख में समता नहीं त्याग, कभी नहीं धरारोगे ।
 किमी अवस्था में रह कर भी, चित्तानन्द का ध्यायेगे ॥
 सब जीवों पर दया किमी का, तुम कभी नहा दिये कदर ।
 जीवन धन्य उन्हीं पुरुषों का, चित्तक मन में शान्ति सदा ॥
 तज इषा अभिमान क्रोध चुनि पर निन्दा से दूर रहो ।
 राग द्वेष है नियम क बरी, उनसे नाता छोड़ चला ॥
 क्षमा शील सन्तोष और सुख, ज तर में है बाध नहीं ।
 पा सकता है ध्यान लगाले, यन्तर में सुख शान्ति रही ॥



